किशोर साहू जाने-माने फिल्मी कलाकार और साहित्यकार हैं। वे प्रसिद्ध फिल्म-निर्देशक और लोकप्रिय अभिनेता हैं। इन्होंने कहानियां, नाटक और कविताएं लिखी हैं। इनका अपना ही एक तर्ज़-बयां है, और घटनाओं और वस्तुओं को देखने का अलग दृष्टिकोण।

'शादी या ढकोसला' में किशोर साहू के तीन एकांकी नाटक हैं। इनमें फिल्म-निर्देशक और अभिनेता किशोर साहू के व्यक्तित्व और कला की पूरी-पूरी छाप है। ये रंगमंच पर भी सफलतापूर्वक खेले जा चुके हैं।

HIND-SERIES-HINDI
Re. 1.00

"मनुष्य जाति में पाए गए तमाम रिश्ते मैं समझ सकती हूं ; पर जो रिश्ता समझ में नहीं आता, वह है पति-पत्नी का रिश्ता ! पिता-पुत्र का रिश्ता मैं समझ सकती हूं क्योंकि वह स्वाभाविक है...मां और बेटे का रिश्ता, बहिन-भाई का रिश्ता भी समझ सकती हूं...पर पति-पत्नी का रिश्ता..."

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड

## क्रम

शादी या ढकोसला

# शादी या ढकोसला

## पात्र

कमलनारायण तिवारी : प्रोफ़ेसर

कमल का नौकर

राजा : वकील, कमल का दोस्त

माला मिश्रा : लेक्चरर, कमल की दोस्त

पोस्टमैन

स्थान : हिन्दुस्तान का कोई भी एक शहर, जहाँ विद्यार्थियों की तालीम के लिए एक कालेज बना हुआ हो और जहाँ पर सीने में दर्द दिल लिए एक प्रोफ़ेसर, एक नाकामयाब मगर खुशमिज़ाज कानूनी वकील साहब, और शादी को ढकोसला कहनेवाली कुमारी के बजाय 'मिस' कहलानेवाली एक एम० ए०, बी० टी० युवती का होना नामुमकिन न हो।

समय : आज—लगभग साढ़े तीन बजे दोपहर।

[कमलनारायण तिवारी की बैठक। कमरा दूसरी मंज़िल पर है। कमरे के बीच एक सोफ़ासेट पड़ा हुआ है। मध्य में शीशे की एक गोल मेज़ है, जिसपर राखदान और सिगरेट का डिब्बा रखा हुआ है। सोफ़े पर लाल साटिन का एक तकिया है। कमरे में दो दरवाज़े हैं—एक सोफ़े के पीछेवाली दीवार में, पासवाले कमरे में खुलता है, और दूसरा बाईं दीवार में, बाहर को ज़ीने पर खुलता है। दाईं दीवार में कहीं एक खिड़की है जिसमें से पड़ोस के किसी मकान का एक

दिखाई देता है। दाईं दीवार से लगी, आगे को एक मेज़ रखी है और उसके पास एक छोटी-सी कुरसी है। मेज़ पर लिखने-पढ़ने का कुछ सामान और बिजली का टेवल-लैम्प है। इसी मेज़ पर टेलीफोन भी रखा हुआ है। बाईं ओर पीछे की दीवारों के बीच के कोने में किताबों की आलमारी रखी है। खिड़की, दरवाज़ों में आधुनिक ढंग पर परदे लटक रहे हैं। पीछे की दीवार पर घड़ी टंगी हुई है, जिसमें साढ़े तीन बज रहे हैं। परदा उठने पर कमलनारायण तिवारी टेलीफोन पर बात करता हुआ दिखाई देता है। कमल की उम्र तीस साल की होगी। देखने में वह अच्छा है।

कमल का नौकर साग-भाजी की थैली लिए बायें दरवाज़े से प्रवेश करता है और दरवाज़ा अधखुला छोड़कर पीछे के दरवाज़े अन्दर चला जाता है।]

कमल

घड़ी की ओर देखता हुआ)

हलो! ...हलो! ...हां, कौन, आशा? मैंने कोई खलल तो पहुंचाया? क्या कर रही थीं? ओह, पिक्चर जा रही । खैर, मैंने तुम्हें इसलिए फोन किया...मैंने कहा, पिक्चर खने जाना कोई बहुत ज़रूरी तो नहीं? ...योंही, मुझे मसे कुछ खास बात करनी थी। किसी मामले में तुम्हारी लाह लेनी है। तुम आ सकती हो? हां, अभी, इसी दम। घड़ी की ओर देखकर) देखो, साढ़े तीन बज रहे हैं।... ात का फैसला मुझे चार बजे तक कर ही डालना है। मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है।...टेलीफोन पर मैं नहीं ता सकता। हां, तुम जल्दी चली आओ। (कमल टेलीफोन रसीवर रखने को होता है, मगर आशा की आवाज़ सुनकर फिर से

बात करने लगता है।) हैं ? क्या कहा ? अच्छा ! कित
निकल गई क्या ?···मेरी प्रति पोस्ट से भेजी है ? ख
आती ही होगी। तो तुम आ रही हो न ? हां, जल्दी आओ
(टेलीफ़ोन रखकर सतोष की सास लेता हुआ) उफ !···

[कमल उठकर सोफे के पास आता है और बैठना हुआ सिग
सुलगाता है। फिर, सोफे पर लेटकर, लाल तकिये से खेलने
है। उसे ऊपर को उछालता है। बाईं ओर का दरवाज़ा खुल
है और आशा मित्रा की अभी प्रकाशित हुई पुस्तक 'शादी
ढकोसला' बगल में दबाए खन्ना अन्दर प्रवेश करता है। ख
की उम्र चालीस की होगी। सिर पर चांद है और आंखों
ऐनक। कमल को तकिया उछालते देख खन्ना मुस्कराता है अ
दरवाज़ा भेड़कर मध्य की ओर बढ़ता है।]

खन्ना

तो मैंने कहा, तकिया उछाल रहे हैं श्रीमान कमल
नारायण तिवारी ! (कमल चौंक पड़ता है।) कहिए खैरिय
तो है ?

कमल

ओह, तुम ! आओ, खन्ना, आओ ! यह क्या है ?

खन्ना

यह ? यह एटम बॉम्ब है !

कमल

एटम बॉम्ब ?

खन्ना

जी। यह है तुम्हारी आशा मित्रा की नई किताब—'शादी
या ढकोसला' ! पढ़ी तुमने ?

कमल

नहीं, अभी नहीं। मेरी प्रति आशा ने पोस्ट से भेजी है। ाम की डाक से शायद मिले। देखूं?

[कमल हाथ बढ़ाता है। खन्ना उसे किताब दे देता है।]

खन्ना

देखो, ज़रूर देखो! अभी तो तकिया उछाल रहे थे, ज़ूर, इसे पढ़कर कहीं खुद न उछल पड़िएगा!

कमल

(किताब के पन्ने उलटता हुआ)
यानी?

खन्ना

भई, हद हो गई! तुम्हारी आशा से हमें यह आशा कभी ।

कमल

(साश्चर्य)
क्यों, क्या हुआ?

खन्ना

(सोफे पर बैठता हुआ)
यह किताब नहीं लिखी है, एटम बॉम्ब गिराया है आशा- ने! (कमल के हाथ से किताब लेकर एक खास पृष्ठ खोलकर ता है।) लिखती हैं—ज़रा ध्यान से सुनो!

कमल

हां, हां, सुनाओ।

खन्ना

लिखती हैं—"मनुष्य जाति में पाए गए तमाम रिश्ते मैं

समझ सकती हूं; पर जो रिश्ता समझ में नहीं आता वह है पति-पत्नी का रिश्ता !"…सुन रहे हो ?

कमल

पढ़े जाओ ।

खन्ना

"…पिता-पुत्र का रिश्ता मैं समझ सकती हूं क्योंकि वह स्वाभाविक है । मां और बेटे का रिश्ता, बहिन-भाई का, गुरु-शिष्य का रिश्ता भी समझ सकती हूं, क्योंकि ये सब स्वाभाविक रिश्ते हैं ; पर पति-पत्नी का रिश्ता कृत्रिम है, बनावटी है, जिसे समाज ने अपनी कामाग्नि शांत करने के लिए ज़रूरी करार दिया है । इसीलिए उसने शादी-ब्याह की रस्म को, जो मेरे ख्याल में बिलकुल ढकोसला है, धर्म का रूप दिया है, और हम सबकी नज़रों में इस प्रथा के प्रति आदर-भाव पैदा करने की कोशिश की है । मैं फिर कहती हूं यह शादी नहीं, ढकोसला है ! क्या पुरुष और स्त्री के अनेक रिश्तों में कोई कमी थी जो पति और पत्नी का रिश्ता भी ईजाद किया गया ? क्या बहिन-भाई, मां-बेटे के रिश्ते ही काफी न थे जो पति और पत्नी के रिश्ते की ज़रूरत पड़ी ?"

कमल

(ठहाका मारकर हसता हुआ)

तो इसके मानी हुए कि मिस आशा मिश्रा, एम० ए०, बी० टी० को अभी तक यह भी पता नहीं कि…

खन्ना

…कि अंडे से मुर्गी बनी या मुर्गी से अंडा ! (कमल हसता है और खन्ना भी ।) यार तिवारी ! यह आशा मिश्रा क्या सच में शादी के खिलाफ है ?

कमल

नहीं, अभी नहीं। मेरी प्रति आशा ने पोस्ट से भेजी है। ाम की डाक से शायद मिले। देखूं ?

[कमल हाथ बढ़ाता है। खन्ना उसे किताब दे देता है।]

खन्ना

देखो, जरूर देखो! अभी तो तकिया उछाल रहे थे, ुज़ूर, इसे पढ़कर कहीं खुद न उछल पड़िएगा!

कमल

(किताब के पन्ने उलटता हुआ)

यानी ?

खन्ना

भई, हद हो गई! तुम्हारी आशा से हमें यह आशा कभी ।

कमल

(साश्चर्य)

क्यों, क्या हुआ ?

खन्ना

(सोफे पर बैठता हुआ)

यह किताब नहीं लिखी है, एटम बॉम्ब गिराया है आशा-ेवी ने! (कमल के हाथ से किताब लेकर एक खास पृष्ठ खोलकर ढ़ता है।) लिखती हैं—ज़रा ध्यान से सुनो!

कमल

हां, हां, सुनाओ।

खन्ना

लिखती हैं—"मनुष्य जाति में पाए गए तमाम रिश्ते में

समझ सकती हूं; पर जो रिश्ता समझ में नहीं आता वह है पति-पत्नी का रिश्ता !"...सुन रहे हो ?

कमल

पढ़े जाओ।

खन्ना

"...पिता-पुत्र का रिश्ता मैं समझ सकती हूं क्योंकि वह स्वाभाविक है। मां और बेटे का रिश्ता, बहिन-भाई का, गुरु-शिष्य का रिश्ता भी समझ सकती हूं, क्योंकि ये सब स्वाभाविक रिश्ते हैं; पर पति-पत्नी का रिश्ता कृत्रिम है, बनावटी है, जिसे समाज ने अपनी कामाग्नि शांत करने के लिए जरूरी करार दिया है। इसीलिए उसने शादी-ब्याह की रस्म को, जो मेरे ख्याल में बिलकुल ढकोसला है, धर्म का रूप दिया है, और हम सबकी नजरों में इस प्रथा के प्रति आदर-भाव पैदा करने की कोशिश की है। मैं फिर कहती हूं, यह शादी नहीं, ढकोसला है ! क्या पुरुष और स्त्री के अनेक रिश्तों में कोई कमी थी जो पति और पत्नी का रिश्ता भी ईजाद किया गया ? क्या बहिन-भाई, मां-बेटे के रिश्ते ही काफी न थे जो पति और पत्नी के रिश्ते की ज़रूरत पड़ी ?"

कमल

(ठहाका मारकर हसता हुआ)

तो इसके मानी हुए कि मिस आशा मिश्रा, एम० ए०, बी० टी० को अभी तक यह भी पता नहीं कि...

खन्ना

...कि अंडे से मुर्गी बनी या मुर्गी से अंडा ! (कमल है और खन्ना भी।) यार तिवारी ! यह आशा मिश्रा क्या में शादी के खिलाफ है ?

कमल

यह तो ज़ाहिर है। वरना मैं अभी तक उससे शादी न कर लेता?

खन्ना

हां यार, तुमने भी कमाल कर दिया! पूरे पांच साल से उसके पीछे पड़े हुए हो और वह···

कमल

पांच नहीं, छः! थर्डईयर में मुलाकात हुई थी हम दोनों की। दो साल बी० ए० के, दो साल एम० ए० के और उसके बाद एक के बजाय दो साल उसने बी० टी० में लगा दिए।

खन्ना

(अफसोस ज़ाहिर करता हुआ)

न जाने ये लौंडियां इतना पढ़-पढ़कर बी०ए०, एम० ए०, टी० वगैरह-वगैरह तमाम डिग्रियां ले-लेकर करेंगी क्या? र बच्चे तो उन्हें पैदा करने ही हैं! और बच्चे पैदा रने में डिग्रियों की क्या दरकार?

कमल

(गोल मेज़ पर रखे हुए डिब्बे से सिगरेट निकालकर खन्ना को देता है और एक खुद लेता हुआ)

वे यह साबित करना चाहती हैं कि पुरुषों से स्त्रियां किसी बात में कम नहीं।

खन्ना

(अपनी और कमल की सिगरेट सुलगाता हुआ)

अरे रहने भी दो! उन्हें यह तक तो पता नहीं कि अंडे से मुर्गी बनी या मुर्गी से अंडा! अगर तुम मेरा कहा मानो तिवारी, तो अब आशा का पीछा छोड़ दो। वह औरत थोड़े ही है!

(साश्चर्य)

एँ ? औरत नहीं ? तो फिर क्या है ?

खन्ना

लिफाफा है, लिफाफा—बिना टिकट का खाली लिफाफा (कमल हंसता है।) और कोई होती तो कब की तुम्हारी ह चुकी होती। ज़रा सोच लो, एम० ए० के बाद ही अगर तुम उससे शादी के लिए कहा होता और अगर तभी तुम दोन की शादी हो गई होती, तो प्रोफेसर साहब, आज आपके आध दर्जन बच्चे होते !

कमल

अमां खन्ना, तुम भी कमाल करते हो ! दो साल अन्दर आधा दर्जन बच्चे ! (हंसता है।) यह तो तुम्ह ज़्यादती है।

खन्ना

क्यों ? ज़्यादती कैसी ? हमारी श्रीमतीजी को ही देखं दो साल में पूरे चार गिन दिए—और यह सब बिना डिग्रि के ! ...हां !

कमल

(हंसता हुआ)

भई, हमारी भाभी की बात दूसरी है ! वे तो एकसाथ (दो उंगलियां दिखलाता है।)

खन्ना

तो फिर अब और कितने साल आशा मिश्रा के पीछे

कमल

बस, आज आखिरी दिन है।

(खन्ना चौंककर कमल की ओर देखता है।)

खन्ना

(साश्चर्य)

आखिरी दिन ?

कमल

हां, आज आखिरी दिन है। आज ही चार बजे तक मुझे
सला कर डालना है।

खन्ना

फैसला ? किस बात का ?

कमल

कि मैं शादी···

खन्ना

आशा से करूं या न करूं ?

कमल

हीं, सरला से करूं या विमला से करूं ?

खन्ना

(उठकर खड़ा होता हुआ, साश्चर्य)

हैं ?···सरला ! विमला ! ···अरे, बात आशा की हो रही
ो, ये सरला और विमला कहां से टपक पड़ीं ? (कमल
स्कराता है।) कौन हैं ये सरला और विमला ?

कमल

दो लड़कियां हैं। मुझपर मरती हैं।

खन्ना

(दिलचस्पी लेता हुआ फिर से बैठकर)

अच्छा !

कमल

- और मैंने दोनों से आज ही चार बजे तक जवाब देने क
वादा किया है। चाय के लिए दोनों ही आ रही हैं चार बजे
आशा को भी मैंने बुलाया है। शायद वह मेरे लिए तय कर
सके कि मैं शादी दोनों में से किससे करूं ?

खन्ना

(फौरन ही)
अरे यार, दोनों से कर डालो !
[दरवाज़े की घंटी बजती है। कमल उठकर बैठ जाता है।]

कमल

ज़रा देखो तो खन्ना, कौन है ! तुम बिठाओ, मैं मुह-हाथ
धोकर अभी आया।
[कमल पीछे के दरवाज़े से अन्दर के कमरे में चला जाता है
खन्ना घड़ी की ओर देखकर समझ जाता है कि सरला, विमल
आई हैं। चार बजने में अभी बहुत देर है।]

खन्ना

(स्वगत)
सरला ! विमला !
[घंटी बराबर बज रही है। खन्ना उठकर दरवाज़े पर पहुंच रह
है कि दरवाज़ा खुलता है। आशा मिश्रा अन्दर प्रवेश करती है
दरवाज़ा बन्द करके आगे बढ़ती है। आशा लगभग चौबीस व
है। काफी सुन्दर है।]

खन्ना

ओह, आशादेवी ! मैं समझा

आशा

नमस्ते, खन्ना साहब !

खन्ना

नमस्ते, नमस्ते ! कहिए कैसे हैं मिज़ाज ?

आशा

(कमल को ढूंढ़ती है ।)

अच्छी हूं ! शुक्रिया । कमल कहां है ?

खन्ना

अंदर—मुंह-हाथ धो रहा है । वैठिए न ।

[आशा वैठ जाती है, मगर खन्ना की सूरत देखकर उसे लगत है कि कुछ गोलमाल है ।]

आशा

क्या वात है, खन्ना साहव ? आप कुछ परेशान-से मालूम ते हैं ।

खन्ना

। तो ।

आशा

फिर आप मुझे देखकर झिझके क्यों ? क्या किसी औ ा इन्तज़ार था ? किसकी राह देख रहे थे आप ?

खन्ना

(सकपकाकर)

नहीं तो···हां···नहीं···मेरा मतलव है···

आशा

नहीं, हां, नहीं—यानी आखिर मैं क्या समझ रियत तो है ?

खन्ना

जी।

आशा

कमल कहां है ?

खन्ना

अन्दर है।

आशा

नहीं, कमल अन्दर नहीं है। जरूर आप मुझसे कुछ छिप रहे हैं। अभी-अभी कमल ने मुझे यहां आने के लिए टेली फोन किया और अब देखती हूं वह खुद ही गायब है। (उठ कर खड़ी हो जाती है और पिछले दरवाजे पर जाकर पुकारती है। कमल, कमल…

खन्ना

अरे भई तिवारी, मिस एटम बॉम्ब आई हैं !

कमल की आवाज

कौन, आशा ?

आशा

हलो ! क्या कर रहे हो अंदर ?

कमल की आवाज

बैठो, आशा। मैं अभी आया !

[आशा सोफे के पास लौट आती है। जैसे ही बैठने लगती है, उसकी नज़र पास में पड़ी हुई किताब पर जाती है।]

आशा

(किताब उठाती हुई)

यह लो ! और अभी मुझसे कह रहे थे कि पहुंची ! आदमियों की कुछ आदत ही होती है

खन्ना

लीजिए, आने की देर नहीं और छूटने लगे आपके ऐटम बॉम्ब ! हुजूर, यह मैंने खरीदी है। मेरी है यह !

आशा

ओह ! मैं समझी यह वह प्रति है जो मैंने कमल को भेंट की है।

खन्ना

जी, तो आप गलत समझीं !

आशा

हां, तो क्या हो गया ? गलती इन्सान ही से होती है। ग्या मर्द लोग गलती नहीं करते ?

खन्ना

करते हैं। जरूर करते हैं। मगर इतनी नहीं जितनी औरतें ी हैं। और जब मर्द गलती करते हैं तो अपनी गलती भी कर लेते हैं।

आशा

बिलकुल झूठ ! खन्ना साहब, आप वकील हैं मैं जानती हूं, पर मुझे आप बहस में नहीं हरा सकते।

खन्ना

अजी, मेरी क्या बिसात ! आज तक कभी किसी मर्द ने किसी औरत को बहस में हराया है जो मैं आपको हराने का दम भरूं !

आशा

अच्छा तो बताइए न, मैंने कब अपनी गलती कबूल नहीं की ?

खन्ना

(व्यंग्य के तौर पर)

मैं क्या बताऊं! आपने तो शायद कभी कोई गलती हो नहीं की।

आशा

अगर की है तो कबूल भी की है।

[खन्ना ठहाका मारकर हंसता है।]

खन्ना

जिस दिन आप अपनी गलती कबूल कर लेंगी, उस दि क्या होगा, जानती हैं आप?

आशा

(मुस्कराहट रोककर)

क्या होगा, सुनूं?

खन्ना

सूरज पूरब से नहीं, पश्चिम से निकलेगा!

[आशा खिलखिलाकर हंस पड़ती है।]

आशा

खैर, निकलेगा तो! मैं तो समझी सूरज ही नहं निकलेगा!

खन्ना

हां, हां, यह भी कुछ नामुमकिन नहीं, मिस एटम बॉम्ब

आशा

आप मुझे एटम बॉम्ब क्यों कहते हैं?

खन्ना

क्योंकि एटम बॉम्ब और आपमें···खैर जाने दीजिए राज मुझ ही तक रहने दीजिए।

खन्ना

लीजिए, आने की देर नहीं और छूटने लगे आपके ऐटम
ब ! हुज़ूर, यह मैंने खरीदी है। मेरी है यह !

आशा

ओह ! मैं समझी यह वह प्रति है जो मैंने कमल को भेंट
ो है।

खन्ना

जी, तो आप गलत समझीं !

आशा

हां, तो क्या हो गया ? गलती इन्सान ही से होती है। क्या मर्द लोग गलती नहीं करते ?

खन्ना

करते हैं। ज़रूर करते हैं। मगर इतनी नहीं जितनी औरतें
ी हैं। और जब मर्द गलती करते हैं तो अपनी गलती
भी कर लेते हैं।

आशा

बिलकुल झूठ ! खन्ना साहब, आप वकील हैं मैं जानती
, पर मुझे आप बहस में नहीं हरा सकते।

खन्ना

अजी, मेरी क्या बिसात ! आज तक कभी किसी मर्द ने
किसी औरत को बहस में हराया है जो मैं आपको हराने क
दम भरूं !

आशा

अच्छा तो बताइए न, मैंने कब अपनी गलती कबूल न
की ?

सन्ना

(व्यंग के तौर पर)

मैं क्या बताऊं! आपने तो शायद कभी कोई गलती ही नहीं की।

माशा

मगर की है तो कबूल भी की है।

[सन्ना ठहाका मारकर हंसता है।]

सन्ना

जिस दिन आप अपनी गलती कबूल कर लेंगी, उस दिन क्या होगा, जानती हैं आप?

माशा

(मुस्कराहट रोककर)

क्या होगा, सन्नू?

सन्ना

सूरज पूरब से नहीं, पश्चिम से निकलेगा!

[माशा खिलखिलाकर हंस पड़ती है।]

माशा

खैर, निकलेगा तो! मैं तो समझी सूरज ही निकलेगा!

सन्ना

हां, हां, यह भी कुछ नामुमकिन नहीं, मिस एटम बॉम्ब

माशा

आप मुझे एटम बॉम्ब क्यों कहते हैं?

सन्ना

क्योंकि एटम बॉम्ब और आपमें···खैर जाने दीजिए राज मुझ ही तक रहने दीजिए।

[आशा मुस्कराती है और सोफे पर आराम से लेटकर लाल तकिया उछालने लगती है ; ठीक उसी तरह, जिस तरह कुछ देर पहले कमल उछाल रहा था ।]

आशा

अच्छा यह तो कहिए, खन्ना साहब, आपको मेरी किताब कैसी जंची ?

खन्ना

(पास की कुर्सी पर बैठता हुआ)

उंहुं, कुछ जंची नहीं ! बिलकुल नहीं जंची !

[आशा को बुरा लगता है । पर वह मन का भाव छिपा लेती है ।]

आशा

(मुस्कराकर)

~ ! और कमल को ?

खन्ना

तिवारी ने अभी पढ़ी ही नहीं । दो-चार शब्द मैंने पढ़कर सुनाने चाहे तो बेचारे को सिर पर ठंडा पानी डालने की ज़रूरत महसूस हुई !

आशा

मर्द-मर्द सब बराबर ! आप लोगों को यह कैसे अच्छा लगेगा कि कोई आपकी पोल खोल दे ! तभी तो मेरी यह किताब छापने के लिए बहुत-से छापेखानों ने इन्कार कर दिया था—क्योंकि तमाम छापेखानों के मालिक पुरुष हैं !

खन्ना

यों कहिए आशादेवी, कि यह किताब आखिर छप इसलिए गई कि यह एक स्त्री की लिखी हुई थी । पुरुष स्त्री के

प्रति बहुत उदार होता है—और खासकर जब स्त्री एम० ए० वी० टी० हो और···देखने में भी···

आशा

आप बड़े बेशर्म हैं !

खन्ना

खैर, ऐसा ही सही। बहस करने बैठी थी और गाली देने लगी !

आशा

मैंने आपको कोई गाली तो नहीं दी।

खन्ना

(स्वगत)
जी नहीं, प्यार किया !

आशा

जी, क्या कहा ?

खन्ना

जी, मैंने कहा, 'बेशर्म' शब्द को गाली समझना भी शायद आपकी नहीं मेरी ही गलती होगी।

आशा

आप मुझे एटम बॉम्ब कह सकते हैं, पर मैं आपको बेशर्म भी नहीं कह सकती ! यह खूब इन्साफ रहा आपका ! तभी तो मैं कहती हूं, पुरुष बड़ा मतलबी होता है ; और उसका इन्साफ······

खन्ना

(व्यंग्य के तौर पर)
आपका मतलब गैर-इन्साफ !

आशा

मेरा वस चले तो पुरुष जाति का नामो-निशान मिटा दूं स दुनिया से !

[कमल कपड़े वदलकर, कुरता और पाजामा पहने, पीछे के दरवाज़े से प्रवेश करता है और चुपचाप सोफे के पीछे खड़ा हो सुनने लगता है।]

खन्ना

उससे क्या होगा, जानती हैं आप ?

आशा

होगा क्या ? पृथ्वी पर सुख से राज करेंगी स्त्रियां !

खन्ना

अहा हा हा ! कै दिन राज करेंगी स्त्रियां ?

आशा

जन्म-भर,—हमेशा—जव तक दुनिया कायम है !

कमल

(आगे वढ़ता हुआ)

तव फिर मैं पूछता हूं कि वच्चे क्या दूसरी दुनिया से पका करेंगे ?

[खन्ना ठहाका मारकर हंसता है। आशा वुद्धू की तरह देखने लगती है।]

आशा

(झुंझलाकर)

ओह, तो क्या सिर्फ यही पूछने के लिए तुमने मुझे यहां लाया था ? आव घंटे से मुझे यहां अकेले विठाकर…

खन्ना

अकेले कैसे ? मैं भी तो साथ था ! …अच्छा, आशादेवी,

यह किताब तो आपने लिखी है, अब मैं पूछता हूं···

आशा

तो क्या आपने आकर लिख दी थी !

खन्ना

जी नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था। आप तो बस जरा जरा-सी बात में एटम बॉम्ब की तरह फट पड़ती हैं !

आशा

देखिए, आप फिर मुझे गाली दे रहे हैं ! देखा, कमल ! कहीं मैं भी कुछ कह बैठूंगी तो···

कमल

एटम बॉम्ब कोई गाली तो नहीं हुई, आशा !

आशा

ऊंट का गवाह मेंढक ! पुरुष पुरुष की ही तरफदारी करेगा ! क्यों न करे ! तभी तो मैं कहती हूं···

खन्ना

जी, आप जो कहना चाहती हैं वह सब इस किताब में कह चुकी हैं। और यह किताब मैं पढ़ चुका हूं। अब मैं आपसे सिर्फ एक सवाल करने की गुस्ताखी करूं ?

आशा

शौक से !

खन्ना

तो फिर यह बताइए, आशादेवी, कि दुनिया में पहले अंडा पैदा हुआ या मुर्गी ?

आशा

क्या मतलब ?

कमल

खन्ना का मतलब है, आशा, कि अंडे से मुर्गी बनी या मुर्गी से अंडा ?

खन्ना

हां ! अंडे से मुर्गी बनी या मुर्गी से अंडा ? बताइए !

आशा

(खन्ना से)

आपका क्या ख्याल है ?

खन्ना

सवाल मेरा है ।

आशा

बेशक मुर्गी पहले पैदा हुई । मुर्गी से अंडा बना ।

[कमल और खन्ना हंसते हैं ।]

खन्ना

! अंडा पहले पैदा हुआ दुनिया में । अंडे से मुर्गी ।

आशा

नहीं ! मुर्गी से अंडा बना ।

खन्ना

अंडे से मुर्गी बनी !

आशा

आप तो यों कह रहे हैं मानो आप उस वक्त मौजूद थे, जब ्वी का निर्माण हुआ और भगवान ने आसमान से मुर्गी का डा टपकाया ।

[कमल हंसता है ।]

खन्ना

- जी, मैं···मैं···मौजूद तो नहीं था, मगर आप सच मानि
अंडा पहले पैदा हुआ, मुर्गी बाद में !

आशा

यह तो अपनी मुर्गी की एक टांगवाली बात हुई ! को
सबूत भी है आपके पास ?

खन्ना

सबूत की क्या जरूरत ? बात साफ है !

आशा

क्यों कमल, तुम्हारी क्या राय है ? अंडा पहले पैदा हुअ
या मुर्गी ?

कमल

मेरे खयाल में तो न अंडा पहले पैदा हुआ और न मुर्गी

आशा

(साश्चर्य)

तब फिर ?

कमल

पहले पैदा हुए···मुर्गा और मुर्गी दोनों ही !

[खन्ना हंसता है। आशा उलझन में पड़ जाती है।]

खन्ना

यह खूब रही ! मुर्गा और मुर्गी (कमल और आशा
ओर इशारा करके) दोनों ही ! भई तिवारी, बात पते व
कही तुमने ! अब चाय पिला दो इसी बात पर ! (
याद कर) अरे ! तुम्हारी सरला और विमला नहीं आईं
तक ?

[कमल घड़ी की ओर देखता है।]

कमल

[illegible] वजने में अभी वक्त है।

आशा

[illegible]

सरला और विमला ?…

खन्ना

जी हां, कमल की ये दो नई दोस्त हैं। मुझे भी आज ही
ता चला।

आशा

सरला !…विमला !…कौन हैं ये, कमल ?

कमल

मेरी दोस्त। चार वजे चाय पर आ रही हैं। तुम उनसे
मलकर वहुत खुश होगी।

आशा

तुमने मुझे उनसे मिलाने के लिए ही वुलाया है ?

आशा कुछ विगड़कर उठने को होती है। पर कमल उसे हाथ
पकड़कर विठा देता है और खुद भी उसके पास वैठ जाता है।]

कमल

नहीं, नहीं, यह वात नहीं ! मुझे तुमसे कुछ सलाह लेनी
। वड़ा ज़रूरी मामला है। और…(घड़ी की ओर देखकर)
क्त वहुत थोड़ा है।

आशा

वक्त थोड़ा है ? क्या मतलव ?

कमल

चार वजने से पहले ही मुझे वात का फैसला कर डालना
।

आशा

कौन-सी बात का ?

कमल

जिसके लिए मैंने तुम्हें यहां बुलाया है।

आशा

तो कहिए न, सरकार, बात तो कहिए ! घंटे-भर से मु
बाहर बिठाए रखकर आप सिर पर ठंडा पानी छोड़ रहे
और अब···

कमल

ठंडा पानी छोड़ रहा था ? सिर पर ? यानी ?

आशा

मैं क्या जानू ? आपके दोस्त, मिस्टर खन्ना ही···

खन्ना

आपके दोस्त ! तो क्या मैं आपका दोस्त नहीं, मिस आ
मिश्रा ?

आशा

अजी ना, मुझे बख्शिए !

खन्ना

(मुस्कराकर)

अच्छा, कमल को तो आप अपना दोस्त मानती हैं न !

आशा

हां, तो ?

खन्ना

और मैं कमल का दोस्त हूं। क्यों, कमल ?

कमल

हां, हां, जरूर !

(आशा से)

अब आप ही बताइए, दोस्त का दोस्त कौन हुआ ?

आशा

दोस्त का दोस्त दर्द-सर हुआ ! उफ !

[खन्ना और कमल हंसते हैं ।]

कमल

(घड़ी की ओर देखकर)

मैंने कहा, खन्ना, तुम्हें कोई जल्दी तो नहीं है न ?

खन्ना

(इशारा समझकर भी न समझने का भाव दर्शाता हुआ)

अरे, नहीं ! कोई जल्दी नहीं—तुम फिक्र न करो ।

आशा

बड़ी फुरसत है आज आपको !

खन्ना

अजी, यहां जब आते हैं हम, तो फुरसत से ही आते हैं ! , तिवारी ?

कमल

(मुस्कराकर)

भाभी तुम्हारी याद कर रही होंगी !

आशा

घर पर बच्चे रो रहे होंगे आपके लिए, और आप यहां··

खन्ना

कोई चिन्ता न कीजिए आप लोग ! बच्चों को लेक
रवाली मायके गई हुई है और बन्दा बिना चाय पिए, बिन
रला, विमला को देखे यहां से टलनेवाला नहीं !

[कमल और आशा मुस्कराते हैं। खन्ना किनारे की मेज के पासवाली कुरसी पर बैठकर आशा की किताब के पन्ने उलटने लगता है।]

आशा

(खन्ना की ओर कनखियों से देखती हुई)

हां, तो कमल, तुमने बताया नहीं—वह कौन-सा जिन्दगी और मौत का सवाल है जिसमें तुम्हें मेरी सलाह की जरूरत है?

कमल

(घड़ी की ओर देखकर)

हां, आशा, मेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है! तुम मेरी अच्छी दोस्त हो। तुम मुझे छः साल से जानती हो। तुमसे मैं कोई बात नहीं छिपाता। तुम मुझे अच्छी तरह समझती हो…

खन्ना

(किताब में नजर गड़ाए हुए ही)

मुझे शक है। कोई स्त्री किसी पुरुष को नहीं समझ सकती।

[आशा और कमल खन्ना की ओर देखते हैं, मानो यह गलत अन्दाज हुआ हो।]

कमल

चार बजे तक मुझे फैसला कर ही डालना है। चार बजे मुझे जवाब देना है।

आशा

तुम तो पहेलियां बुझा रहे हो, बतलाओगे भी कि ... बात का फैसला करना है?

किस्मत का !

आशा

किसकी किस्मत का ?

कमल

दो ज़िन्दगियों का सवाल है !

आशा

प्रोफेसर साहब, आप क्या गोलमाल बोल रहे हैं, मेरी समझ में खाक नहीं आता ! आज आप लोगों ने कहीं भांग तो नहीं पी रखी है ?

कमल

(पास खिसककर)

मैं···मुझसे···मुझसे कोई···शादी करना चाहती हैं !

आशा

(उठकर)

हैं ?

कमल

हां !

आशा

(फिर बैठकर)

कौन है वह ?

कमल

अरे, एक हो तो बोलूं ! दो जने हैं !···दो लड़कियां मुझसे प्रेम करती हैं।···

आशा

(ताज्जुब से आंखें फाड़कर)

हैं ! दो लड़कियां ?

कमल

हां, दो लड़कियां।···दोनों मुझपर मरती हैं।

आशा

ओह !···और तुम किसपर मरते हो ?

कमल

पता नहीं···मेरा मतलब···

आशा

पता नहीं ! कौन हैं वे ? मैं उन्हें जानती हूं ?

कमल

पता नहीं।

आशा

क्या नाम हैं उनके ?

कमल

एक का नाम सरला है और दूसरी का···

आशा

विमला ?

कमल

हां, हां, विमला ! क्या तुम जानती हो उन्हें ?

आशा

ना।

कमल

फिर तुम्हें उनके नाम कैसे पता ?

आशा

तुम भी, कमल, हद करते हो ! घण्टे-भर से उनका ज़ि··· हो रहा है ! जब से आई हूं बराबर सुन रही हूं, ···

वेमला चाय पर आ रही हैं। सरला-विमला, सरला-विमला, सरला-विमला ! उफ !…

कमल

ओह !

आशा

क्या दोनों वहिनें हैं ?

कमल

हां।

आशा

वड़े अच्छे नाम हैं ! (आशा की आंखों से डाह झलकने लगता है।) सरला !…विमला !…

कमल

वड़ी अच्छी लड़कियां हैं !

आशा

मैंने कव वुरा कहा उन्हें ?…न जाने क्या हो गया है ।को ! जिसे देखो शादी का मर्ज लग रहा है ! क्या इन्सान विना शादी किए नहीं जी सकता ?

खन्ना

(किताव में नजर गड़ाए हुए)

जी नहीं। इन्सान नहीं जी सकता !

आशा

शादी ! शादी ! शादी !…सव ढकोसला है !

कमल

मुझे मालूम है आशा, तुम शादी के खिलाफ हो… र ये दोनों मुझसे प्रेम करती हैं—दोनों को मुझसे मुहव्वत है !

आशा

मुझे प्रेम और मुहब्बत मे भी विश्वास नहीं ! प्रेम वह बीमारी है, मुहब्बत वह औजार है, जिससे कमजोर आदमी बेज़ार रहते हैं । मैं तुम्हीसे पूछती हू कमल, आखिर प्रेम है क्या बला ?

कमल

प्रेम ! मैं कैसे समझाऊं तुम्हें ! तुमने तो कभी किसीसे प्रेम किया ही नहीं !

आशा

मैं कमज़ोर नहीं, जो प्रेम का रोग कभी मुझे लगता !

कमल

खैर, तुम नही समझोगी । पर तुम मुझे इस मामले में सलाह तो दे सकती हो ?

आशा

मैं उस मामले में क्योंकर सलाह दे सकती हूं जिसे मैं समझ ही नहीं सकती, जिसमे मेरा विश्वास ही नहीं ? तुम मेरे दोस्त हो कमल, और मैं नही चाहती कि मैं तुम्हें गड्ढे में गिरने दूं !

कमल

गड्ढा कैसा ?

आशा

शादी गड्ढा नही तो और क्या है ?

[खन्ना आंख पर से ऐनक हटाकर आशा की ओर देखता और फिर पढ़ने लगता है ।]

कमल

मैं शादी को गड्ढा नहीं समझता ।

खन्ना

(किताब में नज़र गड़ाए हुए)

मैं भी नहीं। मैं भी शादी को गड्ढा···

आशा

(खन्ना से, झुंझलाकर)

आप क्यों समझने लगे ! आप तो खुद गड्ढे में हैं ! दुम-कटे सियार की कहानी मैं पढ़ चुकी हूं, जो अपनी दुम कटा-कर दूसरों की दुमों के पीछे पड़ा हुआ था !

खन्ना

(न मुस्कराने की कोशिश करता हुआ)

देखिए आशादेवी, आप मुझे सियार कह रही हैं !

आशा

आप बातें ही वैसी कर रहे हैं—'मैं शादी को गड्ढा नहीं ा !' कमल को शादी करने की सलाह भी शायद आप दी है ?

खन्ना

अजी, आपके आगे मेरी सलाह को कौन पूछता है ! मैंने तो कहा था, दोनों से कर डालो शादी ! पर हमारी बात ह नहीं जंचती किसीको !

कमल

अमां, तुम चुप भी रहो, खन्ना ! (घड़ी की ओर देखकर पांच मिनट रह गए चार बजने को और बात योंही पड़ी है वे लोग अभी आ धमकेंगी ! मैं क्या जवाब दूंगा ?

आशा

जवाब क्या देना है ! कह देना मुझे शादी में विश्वा नहीं !

कमल

मगर मुझे तो शादी में विश्वास है।

आशा

कह देना, मुझे शादी नही करनी है !

कमल

तुम्हें नही मालूम, आशा, वे दोनों मुझे कितना चाहत
हैं, मुझसे कितना प्रेम करती हैं !

आशा

ओह !···फिर वही प्रेम !···पर तुम तो उनसे प्रेम नह
करते ?

कमल

(संकोच के साथ)
मैं···मैं भी उनसे प्रेम करता हू !

आशा

(झुंझलाकर)
ओह ! यह तुम्हें क्या हो गया, कमल ! मैंने कभी स्वा
में भी नही सोचा था कि तुम्हें भी यह प्रेम का रोग दब
बैठेगा !

कमल

जल्दी करो, आशा ! बाद में चाहे जितनी सुना लेना··
(घड़ी की ओर देखता है।) चार बजनेवाले हैं। जल्दी बताओ
दोनों में से किसको 'हां' कहू ?

[आशा और खन्ना भी घड़ी की तरफ देखते हैं।]

खन्ना

दोनों को 'हां' कह दो !

आशा

[illegible] 'ना' [illegible] !

कमल

पर मुझे शादी तो करनी ही है ! मैं वायदा कर चुका हूं दोनों से, कि चार बजे जवाव दूंगा। समझ में नहीं आता क्या जवाव दूं !

आशा

इतनी जल्दी क्या है ? इतमीनान से जवाव देना। शादी वाद में भी हो सकती है।

कमल

(तमककर)

वाद में कव ? जव हम लोग वूढ़े हो जाएंगे ? जव उनके चेहरों पर झुरियां पड़ जाएंगी ?...मैं उन्हें दो साल से हूं...

आशा

(जलन के साथ)

दो साल से !...तुमने कभी उनका ज़िक्र नहीं किया मुझसे ?

कमल

(कनखियों से आशा को देख उसके भावों को ताड़ता हुआ)

पर आज वे वैसी नहीं रहीं जैसी दो साल पहले थीं। शायद साल-भर वाद वैसी भी न रहेंगी जैसी आज हैं।

खन्ना

(किताव वंदकर उठता हुआ)

यह तो विलकुल सच कहा तुमने ! समय की चपत लड़कियों पर वुरी पड़ती है—और खासकर कालेज की लड़कियों

पर ! जब स्कूल से पास होकर लड़की नई-नई कालेज के फर्स्ट
ईयर में आती है—अहा ! कितनी ताज़ा और कैसी आकर्षक
एटरैक्टिव मालूम होती है ! पर वही लड़की विज्ञान, गणि
या इकनॉमिक्स, कैमिस्ट्री, पोलिटिकल साइन्स वगैर
वगैरह ऊल-जलूल विषय पढ़-पढ़ाकर जब कालेज
ग्रैजुएट बनकर निकलती है, तो सच कहता हूं, उस
तरफ देखने से आंखों को तकलीफ होती है ! पिचके हुए गा
धंसी हुई आंखें, मुरझाया हुआ चेहरा और—बिगड़ा हु
दिमाग ! सिवा इनके उसके पास और होता ही क्या है
सच कहता हूं, तिवारी, मेरे घर की मिसरानी दो बच्चों
मां है, पर क्या सेहत है ! कितनी तन्दुरुस्त ! और लाव
तो अंग-अंग से फूटा पड़ता है !

आशा

तभी घरवाली को मायके भेज रखा है आपने !

खन्ना

सच कहता हूं मिस आशा मित्रा, शहर में इतने काले
हैं, पर उनमें एक भी लड़की ऐसी न मिलेगी जो मेरी मि
रानी के मुकाबले में ठहर सके !

आशा

आप तो सरासर लड़कियों का अपमान करने पर
हुए हैं !

खन्ना

अपमान कैसा ? मैं तो सच कह रहा हूं। हां, अलब
आपकी बात दूसरी है। मगर माफ कीजिएगा, अ
भी दो साल पहले जितनी खूब···जितनी···अच्छी लग
थीं उतनी अब···मेरा मतलब है···यह कालेज की पढ़

ड़कियों के हक में विलकुल फायदेमन्द नहीं सावित होती।

[घड़ी टन-टन चार वजाती है। कमल चौंककर घड़ी की ओर ...ता है।]

कमल

आशा! तुमने वताया नहीं? वे लोग आ रही होंगी! ...शा?

आशा

मैं नहीं जानती।

खन्ना

मैं वताऊं। दोनों में छोटी कौन है?

कमल

विमला छोटी वहिन है।

खन्ना

दोनों में ज़्यादा हसीन कौन है?

कमल

व !

खन्ना

दोनों में ज़्यादा कौन चाहती है तुम्हें?

कमल

पता नहीं।

खन्ना

दोनों में ज़्यादा अक्लमन्द कौन है?

कमल

(सोचकर)

सरला।

खन्ना

दोनों में सेहत ज्यादा अच्छी किसकी है ?

कमल

विमला की।

खन्ना

तो विमला को 'हां' कह दो। सूरत भी है उसके पास और सेहत भी। विमला ही तुम्हारी पत्नी होने लायक है।

कमल

तो ऐसा ही सही। क्यों आशा ?

[दरवाज़े की घंटी बजती है। सब चौंक पड़ते हैं।]

आशा

(कमल के कन्धे पर हाथ रखकर)

नहीं, कमल ! खन्ना साहब की कसौटियां गलत हैं। तुम उसको 'हां' कहो जिसे तुम ज्यादा चाहते हो।

कमल

यह तो मैं खुद नहीं जानता कि मैं किसे ज्यादा चाहता हूं...और अगर जानता भी हूं तो...बेकार है !

आशा

क्यों ? बेकार क्यों है ?

कमल

क्योंकि तुम्हारी तरह वह भी शादी और प्रेम में विश्वास नहीं करती।

खन्ना

(स्वगत)

अच्छा ! तो यह तीसरी भी है !

आशा

यह तुम्हें कैसे पता ?

कमल

मुझे पता है। मैं उसे बरसों से जानता हूं।

आशा

तुमने कभी उससे शादी का प्रस्ताव किया ?

कमल

प्रस्ताव करना फिजूल था। वह कभी नहीं मानती।

[घंटी फिर बजती है।]

आशा

एक बार करके क्यों नहीं देखते ?

कमल

हिम्मत नहीं पड़ती। वह शादी की कट्टर विरोधी है। (कुछ सोचकर) मान लो अगर तुम्हींसे कोई कहे कि मुझसे शादी कर लो, तो भला तुम मान जाओगी, आशा ?

[खन्ना चौंककर उन दोनों की तरफ देखता है।]

आशा

यह तो कहनेवाले पर निर्भर है कि वह कौन है।

कमल

मान लो मैं ही कहूं कि मुझसे शादी कर लो, तो क्या तुम…

आशा

मगर तुमने कभी कहा तो नहीं मुझसे !

[घंटी बजती है।]

कमल

(दरवाजे की ओर देखकर)

तो लो, अब कहता हूं। आशा, मुझसे शादी करोगी ?

आशा

मगर तुम तो मुझे नहीं चाहते। तुम तो मुझसे प्रेम न करते !

कमल

तुम्हें नहीं मालूम, मैं तुम्हें कितना चाहता हूं, आशा खन्ना से पूछो। (खन्ना चकित होकर कमल को घूरता है।) मे आंखों में देखो, आशा ! ...वे तुमसे झूठ नहीं बोलेंगी ! ... तुम्हें बहुत प्यार करता हूं, आशा !

आशा

(प्रेमपूर्वक)

मैं भी तुम्हें बहुत चाहती हूं, कमल !

कमल

(बेचैनी में)

सच ! तो तुम मुझसे शादी करोगी ?

आशा

हां, कमल ! मैं तुम्हारी हूं और सदा मैं तुम्हारी ही र हूं !

[खन्ना चकित हो उठ खड़ा होता है।]

खन्ना

(स्वगत)

यह तो गजब हो गया !

कमल

तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि तुम तैयार हो ?

आशा

तुमने कभी मुझसे शादी के लिए कहा ही नहीं ! ता

ा प्रस्ताव लड़की नहीं, लड़का करता है, कमल !

[आशा खुश-खुश शर्माती है। घंटी बजती है और बजती ही ाती है।]

खन्ना

(घंटी की ओर कमल का ध्यान आकर्षित करता हुआ)

सरला-विमला ! !

आशा

(कमल से)

अब उनसे क्या कहोगे ?

[खन्ना दरवाज़ा खोलता है। पोस्टमैन किताब का पार्सल लिए प्रवेश करता है। कमल दस्तखत कर पार्सल ले लेता है। पोस्ट-मैन दरवाज़ा बंद कर चला जाता है। खन्ना कमल के हाथों से पार्सल लेकर खोलने लगता है।]

आशा

(संतोष की सांस लेकर)

मैं समझी सरला, विमला हैं !

खन्ना

(पार्सल खोलता हुआ)

मैं भी यही समझा ! चार तो बज चुके, और वे लोग ी तक नहीं आई !

कमल

(मुस्कराकर)

वे लोग नहीं आएंगी !

[आशा और खन्ना ताज्जुब के साथ कमल के मुंह की ओर देखते हैं।]

आशा

क्यों ?

खन्ना

क्यों ?

कमल

क्योंकि सरला, विमला कोई हस्ती ही नहीं !

आशा

(बिगड़कर)

एं ! तो इतनी देर तुम सिर्फ मज़ाक कर रहे थे ?

कमल

मज़ाक नहीं, तुम्हारे पास शादी का प्रस्ताव रख रहा था

[आशा शर्माकर, खिजलाकर उठ खड़ी होती है, और लाल तकिय कमल को दे मारती है। कमल तकिया लिए हंसता है । खन्न कागज़ों में लिपटी हुई किताब निकालकर उसे घूरता है।]

खन्ना

(किताब का नाम ज़ोरों से पढ़ता हुआ)

शादी या ढकोसला ! शादी या ढकोसला !

[खन्ना जोर-ज़ोर से हंसता है । आशा लपकती है । औ खन्ना के हाथों से किताब छीनकर खिड़की से बाहर फें देती है । मेज़ पर पड़ी हुई दूसरी प्रति भी वहीं रवा होती है, जहां पहली गई थी। पीछे के दरवाज़े से कमल व नौकर चाय की ट्रे लिए प्रवेश करता है और ट्रे गोल मेज़ प रखकर वापस चला जाता है । कमल सोफे में लेटा हुआ ज़ो में लाल तकिया उछाल रहा है और आशा उसे ... निगाह से ताक रही है ।]

परदा

# भूख-हड़ताल

# पात्र

वर्माजी : प्रान्त के प्रधानमंत्री
पं० तिवारी, प्रांत के मंत्री
लाला किशोरीलाल, एम० एल० ए०
आनन्द : बी० ए० का विद्यार्थी, लालाजी का भतीजा
डॉ० रहमान, एम० एल० ए०
देसाई : म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष
स्वामीजी : कवि, गायक
सेठ जगजीवनदास : शहर के रईस
सरदार दलजीतसिंह
दास बाबू
'बी' क्लास के दस-बारह अन्य राजनीतिक कैदी
खाना परोसनेवाले चार कैदी
वॉर्डन तथा जेलर

स्थान : ब्रिटिश इण्डिया का कोई भी बड़ा जेल, जहां पर अंग्रे
सरकार ने हिन्दुस्तानी देशभक्तों को केवल इसलिए ठूस रखा
कि उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ८ अगस्त, १९४
वाली बैठक में अंग्रे बहादुर को हिन्दुस्तान से बाहर खदे
देने का प्रस्ताव [illegible] या था ।

समय : फरवरी, १[illegible] म के सात बजे ।

[जेल का बरा[illegible] की पीछेवाली दीवार में च

दरवाज़े हैं, जिनमें से किनारे के दो दरवाज़े वंद हैं और वीच के दो खुले। वरामदे की दाईं और वाईं दीवारों में भी एक-एक दरवाज़ा है। दाईं दीवार का दरवाज़ा वंद रहता है। नये कैदी इसी दरवाज़े से अन्दर लाए जाते हैं।

वरामदे के पीछे वड़ा भारी कमरा है जिसमें 'वी' क्लास के कैदी रखे जाते हैं। कमरे में करीव तीस आदमियों के रहने का इन्तज़ाम है। कमरे में रखी हुई चारपाइयां और सीमेंट के कुछ चवूतरे दरवाज़ों में से दिखलाई दे रहे हैं।

वाईं दीवार के दरवाज़े से कुछ 'सी' क्लास के कैदी, जिनका काम खाना पकाना और परोसना होता है, अन्दर प्रवेश कर खाना परोस रहे हैं।

लोग कमरे से वाहर निकलकर वरामदे में आ रहे हैं, जहां उनके लिए खाना परोसा जा रहा है।

खाने की घण्टी वज रही है। स्वामीजी और सेठ जगजीवन-दास वाहर वरामदे में आते हैं। स्वामीजी कद में सवसे ऊंचे हैं और उनका सिर घुटा हुआ है।]

स्वामीजी

जव कौरवों-पाण्डवों के वीच युद्ध छिड़ जाने की खवर ताल देश में घटोत्कच को मिली—अमेरिका को उस वक्त ताल देश कहते थे—तो उसकी भुजाएं फड़क उठीं, रगों में खून ौल उठा। वह सीधा अपनी माता के पास पहुंचा और वोला माता, भारत में कौरवों-पाण्डवों के वीच संग्राम छिड़ा आ है। मैं भी लड़ने भारतवर्ष जाऊंगा! मुझे अनुमति ।" माता ने उत्तर दिया, "अवश्य, वेटा, अवश्य जाओ! म्हें मेरा आशीर्वाद है। जव तुम्हारे पिता ही कुरुक्षेत्र मे तरे है तो तुम कैसे चुप वैठ सकते हो!"

सेठ जगजीवनदास

पिता ?...कौन पिता ? अरे हां, खूब याद आया...अर्जुन थे घटोत्कच के...

स्वामीजी

भीम, सेठ जगजीवनदास, भीम ! अर्जुन नहीं ! माथे पर तिलक तो आप इतना बड़ा लगाते हैं और यह भी पता नहीं कि घटोत्कच के पिता अर्जुन थे या भीम ! महाभारत कभी पढ़ा नहीं जान पड़ता है।

सेठ जगजीवनदास

अरे वाह, स्वामीजी, पढा कैसे नहीं ! इस समय नाम जरा दिमाग से...

स्वामीजी

निकल गया !

सेठ जगजीवनदास

(शर्माकर)

हां, धूप में तपी हुई ये काले पत्थरों की दीवारें दिमाग पर बड़ा बुरा असर करती हैं, स्वामीजी !

स्वामीजी

दुहाई है सरकार की !

सेठ जगजीवनदास

हां, तो फिर क्या हुआ, स्वामीजी ?

स्वामीजी

अं ? हां, तब घटोत्कच ने माता के चरण छुए और अपने धनुष पर हाथ रखकर कसम खाई कि जो बाजू हार ... होगी उसीकी मदद के लिए वह जान लड़ा देगा। मा... घबराकर बोली, "बेटा, यह क्या कह रहा है ! तुझे

पिता की ओर से लड़ना होगा ! तुझे पाण्डवों की मदद करनी होगी !" पर घटोत्कच कसम खा चुका था। भारत आकर उसने देखा कौरव हार रहे हैं। उसने कौरवों की मदद के लिए कमर कसी।...

सेठ जगजीवनदास

पर यह कहां की नीति है स्वामीजी, कि बेटा बाप को छोड़ दुश्मन से जा मिले ?

स्वामीजी

भई सेठजी, वे लोग ही ऐसे होते थे, कोई हमारी-तुम्हारी तरह थोड़े ही थे ! तुलसीदासजी कह गए हैं न (गाकर) :
"रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जायं पर वचन न जाई॥"

लाला किशोरीलाल

(बाहर आते हुए)

। हा हा ! दुहाई है ! प्राण जायं पर वचन न जाई ! हा !

स्वामीजी

वचन ! वचन ! ज़बान के पाबन्द थे वे लोग !

सरदार दलजीतसिंह

(थाली पर बैठते हुए)

कौन स्वामीजी ? किसका ज़िक्र है ?

स्वामीजी

हमारे पूर्वज, सरदार दलजीतसिंह, आर्य लोगों का—जिनके हम वंशज हैं।

सरदार दलजीतसिंह

खूब ! खूब ! बिलकुल दुरुस्त ! सिर जाए तो जाए पर बात न जाने पाए !

[वर्माजी बाहर आते हैं। आप उम्र में सबसे ज्यादा हैं।]

वर्माजी

कौन-सी बात सरदारजी ?

सरदार दलजीतसिंह

कोई भी बात, वर्माजी। इंसान को चाहिए कि वह अपने कौल का पक्का हो !

वर्माजी

बेशक ! बेशक ! वरना वह इंसान ही क्या !

लाला किशोरीलाल

माननीय वर्माजी ही की मिसाल ले लीजिए। आपको 'ए क्लास मिला था। और मिलना भी चाहिए था—आखिर आप इतने बड़े प्रांत के प्रधानमन्त्री थे। मगर आपने अपने अन्य भाइयों के साथ 'बी' क्लास में ही रहना पसन्द किया। इस तबेले में सबके साथ भला आपको कम तकलीफ होती है ! पर नहीं, अपनी बात निभाने के लिए आप सब कुछ सह सकते हैं।

डॉ० रहमान

तभी तो आप हम लोगों के लीडर हैं। और हमें आपपर पूरा भरोसा है !

वर्माजी

शुक्रिया, डा० रहमान, शुक्रिया !

लाला किशोरीलाल

माननीय वर्माजी···

वर्माजी

अरे भई, लालाजी, ये माननीय-वाननीय तो जेल में हैं हम, असेम्बली हॉल में तो है

वर्माजी कहिए। यहां आप, हम सब बराबर हैं।

**लाला किशोरीलाल**

(खुशामदाना तौर पर)

यह कैसे हो सकता है! हमारे लिए तो आप माननीय ही हैं, चाहे आप असेम्बली हॉल में हों या कारागार में।

**डॉ० रहमान**

(दास बाबू से)

बड़ा चापलूस है!

**दास बाबू**

बोड़ा खोशामदी!

**डॉ० रहमान**

सोचता होगा, जेल से निकलने पर वर्माजी फिर से प्रीमिनो बनेंगे ही, चापलूसी किए जाओ, वक्त पर काम आएंगे।

पंडित गोविन्दराम तिवारी अखबार पढ़ते हुए आते हैं।]

**डॉ० रहमान**

पण्डितजी, कोई ताज़ा खबर है?

**वर्माजी**

क्या आज का अखबार आ गया?

**पं० तिवारी**

नहीं साहब, तीन रोज़ पुराना पेपर पढ़ रहा हूं।

**दास बाबू**

आज तीन दिन शे होमें ओखबार क्यों नहीं दिया जाता?

**सरदार दलजीतसिंह**

अजीट कोफ्त है! कुछ पता ही नहीं चलता, देश में क्या हो रहा है!

लाला किशोरीलाल

यह तो सरासर ज्यादती है! आखिर हम 'बी' क्लास प्रिज़नर्स हैं, कोई ऐरे-गैरे तो है नहीं! अपना पैदायशी हक—स्वराज मांगते हैं। सरकार के घर में डाका मारने के जुर्म में तो यहां नही आए। फिर हमें अखबार क्यों नही दिया जाता?

[कुछ लोग हसते हैं।]

सेठ जगजीवनदास

सरकार को कोई हक नही कि वह 'बी' क्लास के कैदियों को अखबार न दे।

लाला किशोरीलाल

यह तो एकदम गैर-कानूनी बात है।

सेठ जगजीवनदास

वर्माजी, क्या हम लोग सरकार पर इस बात के लिए मुकदमा नहीं चला सकते? क्या हम अदालत में इन्साफ···

वर्माजी

इन्साफ! कौन करेगा हमारा इन्साफ! कहां है वह अदालत जहां पर हिन्दुस्तान को इन्साफ मिलेगा! हमें बहुत सारे मामलों में इन्साफ मांगना है, सेठजी। हमें अपने लिए इन्साफ मांगना है! हमें अपने बाप, दादा और परदादा के लिए भी इन्साफ मांगना है! दगाबाज़ क्लाइव के झूठे दस्तावेज से लेकर जलियांवाला बाग तक हमें इन्साफ मिलना चाहिए! कहां है वह अदालत, कहां है वह न्याय-मंदिर, कहां है वह 'कोर्ट ऑव जस्टिस', जहां पर गुलामों को इन्साफ मिलता है?

दास बाबू

शेम!

अंग्रेज़ी राज···

सब लोग

मुर्दाबाद !

डॉ० रहमान

इन्कलाब···

सब लोग

ज़िंदाबाद !

देसाई

महात्मा गांधी की···

सब लोग

जय !

लाला किशोरीलाल

माननीय वर्माजी की···

[वर्माजी हाथों के इशारे से सब लोगों को मना करते हैं ।]

सब लोग

जय !

पं० तिवारी

मैंने कहा, वाइसराय ने महात्माजी के खत का कोई ाब नहीं दिया, वर्माजी ?

वर्माजी

दिया भी हो तो हमें कैसे पता चले । तीन दिनों से हमे खबार तो मिलता ही नहीं ।

पं० तिवारी

अब समझा ! इसमें कोई शक नहीं कि वाइसराय हात्माजी को अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है। औ

अपने वचन के मुताबिक बापू का उपवास १० तारीख को शुरू हो गया है। अगर शुरू न होता तो हमारे अखबार बंद होते। सरकार नहीं चाहती कि गांधीजी के फास्ट की खब लगे और हम लोग कोई गड़बड़ करें।

स्वामीजी

मैं समझता हूं आप ठीक कह रहे हैं, पं० तिवारी महात्मा गांधी की भूख-हड़ताल ज़रूर शुरू हो गई है।

वर्माजी

मैं ऐसा नहीं समझता। क्या लिनलिथगो में इतनी जुर् है कि वह महात्माजी के खत को दबा जाए! ज़रूर वा सराय ने जवाब दिया है। बल्कि मेरा तो खयाल है कि गांध जी अभी तक छोड़ भी दिए गए होंगे। यही खबर हम छिपाने के लिए हमारे अखबार भी···

पं० तिवारी

बापू ने शर्त पर छूटना कभी मंजूर नहीं किया होगा।

डॉ० रहमान

और बिना शर्त के सरकार उन्हें छोड़ेगी नहीं!

दास बाबू

और इसीलिए गांधीजी ग्रोबी तोलक आगाखान पैले मइ बोन्द है।

पं० तिवारी

इसका मतलब है कि अपने वचन के मुताबिक ... अनशन शुरू हो गया है।

दास बाबू

माने कि आज उनकी भूख हड़ताल का दूसरा

वर्माजी

आप लोग फिजूल उत्तेजित हो रहे हैं। क्या आप समझते हैं कि चर्चिल इतना बेवकूफ है कि अहिंसा और शान्ति की मूर्ति, महात्मा गांधी, को चुपचाप ऐसे मरने देकर सुभाष बाबू को हिन्दुस्तान का लीडर बनने देगा ? ईश्वर न करे, अगर कहीं गांधीजी चल बसे तो आप लोग जानते हैं क्या होगा ? सुभाष बोस जर्मन या जापानियों की मदद लिए हिन्दुस्तान की सरहद पर आ पहुंचेंगे। सुभाष बाबू या जवाहरलाल नेहरू, आप लोगों को मालूम है, 'नॉन-वॉयलेंस' या अहिंसा के क़ायल नहीं। पं० नेहरू तो गांधीजी के कहने से थोड़ा-बहुत संभले भी हुए हैं पर सुभाष बाबू···

दास बाबू

शुभाष बाबू···

सरदार दलजीतसिंह

!

स्वामीजी

सुभाषचन्द्र बोस की···

दास बाबू

जोय !

लाला किशोरीलाल

आपकी बात दुरुस्त है, माननीय वर्माजी। चर्चिल क सुभाषचन्द्र बोस से महात्मा गांधी ज़्यादा प्यारे हैं।

सरदार दलजीतसिंह

आपका मतलब है, लालाजी, कि सरकार की नज़र ं सुभाष बोस गांधीजी से ज़्यादा खतरनाक दुश्मन हैं !

स्वामीजी

यही बात। और इसीलिए वर्माजी की राय ठीक जचर
कि सरकार गांधीजी को कभी मरने न देगी।

वर्माजी

*मैं फिर कहता हूं गांधीजी छोड़ दिए गए हैं।*

[खाना परोसा जा रहा है। कुछ लोग थाली पर बैठ चुके
कुछ बैठ रहे हैं।]

स्वामीजी

अच्छा, आइए, बैठिए—कुछ पेट-पूजा भी हो जाए
इए, डा० रहमान !

[डॉ० रहमान स्वामीजी की बगल में, थाली पर बैठ जा
हैं।]

लाला किशोरीलाल

यहां विराजिए, माननीय वर्माजी। यहां आइए पंडित
।

[वर्माजी और पंडित तिवारी, लाला किशोरीलाल के दोनों बा
बैठ जाते हैं। खाना इनकी थालियों में भी परोसा जाता है
दाईं ओर का दरवाजा खुलता है। और वॉर्डन आनन्द को जो
से अन्दर धकेलता है। सब लोग चौंक पड़ते हैं। आनंद की उम्र
करीब बीस साल की है। शर्ट-पैण्ट पहने हुए है। उसके बा
बिखरे हुए हैं और कमीज की एक आस्तीन पर खून के धब्बे
हैं।]

आनंद

(गुस्से में लाल-पीला होकर)
बदतमीज ! दूर खड़ा रह, पाजी कहीं का !

वॉर्डन

इतना विगड़िए न, वावू साहव ! अभी तो आए मिनट-र भी नहीं हुआ और तवीयत ऊव गई आपकी !

लाला किशोरीलाल

अरे कौन ? आनंद ! तुम यहां कैसे ?

वॉर्डन

लालाजी, इनको ज़रा खाना दिखाइए, खाना ! भूख ज़ोर की लगी जान पड़ती है। वावू साहव का दिमाग फिर गया है !

[आनंद पास की एक थाली उठाकर वॉर्डन की ओर दे मारता है, पर थाली दरवाज़े से टकराकर रह जाती है, और वाहर खड़ा हुआ वॉर्डन ज़ोर-ज़ोर से हंसता है।]

वॉर्डन

दो साल में अक्ल ठिकाने आ जाएगी, वावू साहव ! ी तो पहला दिन है। और ये रोव अपनी ससुराल मे ना यहां नहीं ! यह गवर्नमेण्ट का जेलखाना है, जेल ाना !

आनंद

अवे जा गवर्नमेण्ट के वच्चे ! इन्हीं जेलों के वीच ए दिन तुम लोगों की चिता धधकेगी !

लाला किशोरीलाल

अरे आनंद, ज़वान पर ज़रा कावू लाओ, वेटा ! यहां का वॉर्डन है। कहीं रिपोर्ट कर देगा जेलर के पास त वॉर्डन साहव, आप जाइए।

आनंद

(व्यंग्य की हंसी हंसकर)

रिपोर्ट ! चाचाजी, पुलिस की गोली खाकर आ र हूं ! क्या इस हरामजादे की रिपोर्ट से घबराऊंगा ?

लाला किशोरीलाल

(घबराकर)

गोली ! कहां लगी, देखू !

आनंद

उसकी मुझे फिक्र नहीं, पर अफसोस इस बात का है कि यहां आकर भी आपकी चापलूसी की आदत न गई।... जेल के एक अदना कारकुन को आप 'वॉर्डन साहब' कहते हैं ! खुशामद ही करनी थी तो जेलर या सुपरिण्टेंडेंट ढूंढ़ते !

[कुछ लोग मुस्कराते हैं और कुछ हंस पड़ते हैं।]

लाला किशोरीलाल

(बिगड़कर)

आनंद ! मैं कांग्रेसमैन हूं। क्या तुम समझते हो मैं सरकारी अफसरों से डरता हू ?

डॉ० रहमान

(उठकर)

लालाजी, आप भी नाहक बिगड़ रहे हैं ! उबल लेने दीजिए थोड़ा इन्हें ! जवान आदमी है। अगर ये नौजवान लोग न उबलेंगे तो क्या हम-आप जैसे... (कुछ लोग लाला-जी पर हंसते है।) आइए साहब, तशरीफ रखिए। (आनद को डॉ० रहमान अपने पानवाली थाली पर बिठा लेते हैं।) मेरा नाम डॉ० रहमान है। और आप शायद ... के...

लाला किशोरीलाल

(अपनी थाली पर वापस बैठते हुए)

जी, यह मेरा भतीजा है, आनंद ! (लोगों से आनंद का
रिचय कराते हुए) और आप माननीय वर्माजी हैं, पं०...
ोविन्दराम तिवारी, सरदार दलजीतसिंह, दास बाबू, सेठ
गजीवनदास, स्वामीजी...

[आनंद एक के बाद एक सब को नमस्कार करता है।]

आनंद

बड़ी खुशी हुई आप सब सज्जनों से मिलकर !

लाला किशोरीलाल

तुमने बताया नहीं, आनंद, तुम कैसे पकड़े गए ?

वर्माजी

बाहर की कुछ खबर सुनाओ भई ! तीन दिनों से हमें
खबार पढ़ने को नहीं मिला।

लाला किशोरीलाल

सब खैरियत तो है ?

आनंद

जी, सब खैरियत है। (डॉ० रहमान आनन्द के मुंह की
ओर देखते हैं।) कल से शहर में हड़ताल है। गलियों और
सड़कों में गोलीबार हो रहा है।

वर्माजी

(चौंककर)

गोलीबार ! क्यों ?

आनंद

महात्मा गांधी ने कल से उपवास शुरू कर दिया है।

वर्माजी

गांधीजी का उपवास शुरू हो गया ?

पं० तिवारी

देखिए, मैं कहता न था ! गवर्नमेंट ने आखिर उन्हे नही छोड़ा।

[लोगों में हलचल पैदा होती है।]

वर्माजी

कहा हैं महात्माजी !

आनंद

वही—पूना के आगाखां पैलेस में।

वर्माजी

लिनलियगो ने उनके खत का क्या कोई जवाब नहीं दिया ?

आनंद

सुनते हैं, जवाब में सरकार ने बहुत सारी चंदन की लकड़ी वैगन भर-भरकर पूना रवाना की है—कि अगर गांधीजी मर जाएं तो उन्हें उन लकड़ियों से फूंक दिया जाए !

दास बाबू

शेम !

डॉ० रहमान

शेम ! लानत है ऐसी गवर्नमेंट पर ! हज़ार लानत !

[डॉ० रहमान थाली ज़ोर से खिसका देते हैं। वर्माजी थाली छोड़कर उठ खड़े होते हैं।]

वर्माजी

भाइयो, जो खबर हमें अभी मिली है आप सब

[illegible] है। हमारे पूज्य महात्मा गांधी
[illegible]-हड़ताल कल से शुरू कर दी
[illegible] कि वह गांधीजी को डरा देगी,
[illegible] भी सरकार को दिखला देंगे कि
[illegible]ांधीजी की जान इतनी सस्ती नहीं जितनी कि वह सम-
[illegible]झती है। हमें भी चाहिए कि गांधीजी से हमदर्दी जतलाते
[illegible]हुए हम लोग टोकन 'हंगर-स्ट्राइक' यानी भूख हड़ताल करें।

सब लोग

हियर ! हियर !

वर्माजी

कोई ज़बरदस्ती नहीं है। जिससे जितना बने उतने दिन उपवास रख सकता है। मैं तीन दिन के लिए उपवास करूंगा।

[बहुत-से लोग थाली छोड़कर उठने लगते हैं।]

पं० तिवारी

(उठते हुए)
तीन दिन का फास्ट मेरा रहा !

डॉ० रहमान

(उठते हुए)
तीन रोज़ मेरा भी !

लाला किशोरीलाल

(उठते हुए)
तीन दिन मैं भी खाना नहीं खाऊंगा !

सरदार दलजीतसिंह

(उठते हुए)
तीन दिन !

दास बाबू

(उठते हुए)

तीन दिन !

स्वामीजी

(उठते हुए)

मेरा उपवास हफ्ते-भर का रहेगा !

[सब लोग स्वामीजी की ओर देखते हैं।]

सेठ जगजीवनदास

(धीरे-धीरे उठते हुए)

उपवास तो मुझे भी करना चाहिए, पर क्या करूं, मेरा दिल कमज़ोर है। कहीं हार्टफेल हो गया तो…पर कोई बात नहीं ! देश की खातिर…

वर्माजी

कोई बात नहीं, सेठजी, यह तो 'टोकन हंगर-स्ट्राइक' है। आप उपवास न कीजिए। आपकी सहानुभूति काफी है।

[सेठजी बैठने लगते हैं, मगर फिर उठ जाते हैं।]

सेठ जगजीवनदास

(थाली की ओर ललचाई नजरों से देखकर) नहीं साहब, फिर भी एक रोज का उपवास तो मैं करूंगा ही !

वर्माजी

महात्मा गांधी की…

[सब लोग थाली छोड़कर उठ जाते हैं। सिर्फ आनंद थाली पर बैठा खाने खाने लगता है।]

सब लोग

जय !

सरदार दलजीतसिंह

भारत माता की...

सब लोग

जय !

डॉ० रहमान

इन्कलाब...

सब लोग

ज़िन्दाबाद !

डॉ० रहमान

आनंद साहब, आप कहते हैं पुलिस की गोली खाकर आ रहे हैं, पर अफसोस है, आपसे थाली नहीं छोड़ी जाती !

आनंद

डॉ० रहमान साहब, गोलियां खानेवाले थालियां छोड़-कर नहीं उठा करते ! (सब हंसते हैं।) वे ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाते !

पं० तिवारी

वे भरपेट खाना खाते हैं !

[सब लोग हंसते हैं।]

आनंद

(थाली लिए उठकर)

माफ कीजिएगा, पर क्या आप लोग समझते हैं कि इस तरह ज़बानी हमदर्दी जतलाने से गांधीजी को कोई फायदा पहुंचेगा ? आज पच्चीस साल से आप लोग प्रोटेस्ट पर प्रोटेस्ट, निषेध पर निषेध करते आए हैं। क्या सरकार डर-कर भाग गई ? सरकार जानती है, चर्चिल और लिनलिथगो जानते हैं कि जो भौंकता है वह काटता नहीं। हमें काटना

पड़ेगा। (स्वामीजी ताली बजाते हैं।) आपकी 'टोकन हंग
स्ट्राइक'—आपकी तीन दिन की भूख हड़ताल से घबराकर स
कार जेलों के दरवाज़े नहीं खोल देगी! उसका तो फ़ायदा ह
होगा—तीन दिन की रसोई बच गई! हमें बदला लेना होग
डॉ० रहमान!

डॉ० रहमान

(मुस्कराकर)

नौजवान, तुम भूल रहे हो। गांधीजी के उसूलों में ब
की जगह नहीं।

आनंद

क्या हैं गांधीजी के उसूल? क्या कह गए थे गांधीज
८ अगस्त को? डू ऑर डाइ! (करो या मरो)! क
करना है हमें? क्या गांधीजी का मतलब सिर्फ़ नारे लगा
से था? क्या गांधीजी यह चाहते थे कि सारा हिन्दुस्ता
भूख-हड़ताल करके मर जाए?

स्वामीजी

कभी नहीं! कभी नहीं!

[स्वामीजी दरी पर बैठ जाते हैं।]

आनंद

क्या आपने गांधीजी का 'नॉन-वॉयलेंस ऑव दी ब्रे
(वीरों की अहिंसा) पर वह मशहूर लेख नहीं पढ़ा? गांधीज
का कहना है कि अगर सरकार का कोई 'सोल्जर' या सिपाह
तुमपर अत्याचार करे, तुम्हारी मां-बहिनों पर जुल्म करे त
तुम उसे रोको, उसके घोड़े के नीचे पड़ जाओ, उसे आगे
बढ़ने दो; पर अगर वह फिर भी न माने और ....
दिखाए तो उसे घोड़े पर से गिरा दो, उनसे उसकी ...

सरदार दलजीतसिंह

भारत माता की···

सब लोग

जय !

डॉ० रहमान

इन्कलाब···

सब लोग

ज़िन्दाबाद !

डॉ० रहमान

आनंद साहब, आप कहते हैं पुलिस की गोली खाकर आ रहे हैं, पर अफसोस है, आपसे थाली नहीं छोड़ी जाती !

आनंद

डॉ० रहमान साहब, गोलियां खानेवाले थालियां छोड़ नहीं उठा करते ! (सब हंसते हैं।) वे ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाते !

पं० तिवारी

वे भरपेट खाना खाते हैं !

[सब लोग हंसते हैं।]

आनंद

शांतिमय हड़ताल ! यह तो सरकार भी चाहती है, चाचाजी। देश के छोटे-बड़े तमाम लीडरों को जेल में बंद कर देने से सरकार समझती थी कि थोड़े दिन शांतिमय हड़ताल होगी और फिर देश चुप हो जाएगा। मगर ८ अगस्त की गांधीजी की ललकार हिन्दुस्तान सुन चुका था। उनके आखिरी लफ्ज थे—करो या मरो—डू ऑर डाइ ! हरएक हिन्दुस्तानी को उन्होंने लीडर करार दिया था। उन्होंने कहा था कि लीडरों के पकड़े जाने के बाद देश का हरएक आदमी अपने तईं लीडर बने, अपने दिमाग से सोचे। हमारे बड़े योद्धा, हमारे बड़े-बड़े नेताओं के कैद हो जाने से यह हलचल बंद होनेवाली नहीं। यह गदर है, चाचाजी, गदर !

दास बाबू

हियर ! हियर !

सरदार दलजीतसिंह

इन्कलाब…

बहुत-से लोग

ज़िंदाबाद !

आनंद

हमें बदला लेना है, चाचाजी ! हमें चेतसिंह की फांसी का बदला लेना है ! हमे जलियांवाला बाग का बदला लेना है ! अयोध्या की बेगमों और बहादुरशाह पर ढाए गए जुल्मों का हमें बदला लेना होगा ! भगतसिंह और यतीन्द्रसेन के खून की हम कीमत मांगेंगे ! चिमूर, आष्टी, और बलिया में बहाई हुई लहू की नदिया अब रंग लाकर रहेंगी ! … राज की अब हम ईंट से ईंट बजा देंगे ! चा

है, गदर !

**स्वामीजी**

शाबाश, बेटा, शाबाश ! आज का हिंदुस्तान नई करवट ले रहा है। भारत माता की…

**बहुत-से लोग**

जय !

**आनंद**

(थाली लेकर बैठता हुआ)
महात्मा गांधी की…

**बहुत-से लोग**

जय !

[सेठ जगजीवनदास भी इधर-उधर देखकर आहिस्ता-से अपनी थाली पर बैठ जाते हैं, और आनंद तथा स्वामीजी का खाने में साथ देते हैं। मंच पर धीरे-धीरे बिलकुल अंधेरा हो जाता है।

फौरन ही, धीरे-धीरे फिर से रोशनी होती है। आज दूसरा दिन है। खाने की घंटी बज रही है। अन्दर से कुछ लोग निकलकर बाहर बरामदे में आ रहे हैं। खाना परोसा जा रहा है। आनंद, स्वामीजी, सेठ जगजीवनदास, सरदार दलजीतसिंह, और दास बाबू खाना खा रहे हैं। लोग ललचाई नजरों से थालियों की ओर देखते हैं। दो-चार आदमी धीरे-से थालियों के पास खिसक आते हैं और खाने लगते हैं।]

**स्वामीजी**

(लाला किशोरीलाल की ललचाई हुई नज़रों पर तरस खाते हुए)

अरे आप भी आ जाइए न, लालाजी ! एक दिन व भूखा रह गए, बहुत हुआ।

लाला किशोरीलाल

नहीं, स्वामीजी। मैंने तीन दिन का उपवास कहा थ सो तो रखूंगा ही।

दास बाबू

आप आ जाइए, डॉ० रहमान ! आपका तो तोबीय ठीक नहीं।

डॉ० रहमान

नहीं जी। वह इंसान ही क्या जो अपना कौल न निभ सके !

आनंद

(आग्रहपूर्वक)

बैठ जाइए, डॉ० रहमान !

डॉ० रहमान

(बैठते हुए)

खैर, तुम लोग जोर ही देते हो तो मैं थोड़ा शरबत पं लूंगा।

लाला किशोरीलाल

(बैठते हुए)

हां, शरबत तो मैं भी पी सकता हूं—पर अन्न न खाऊंगा।

स्वामीजी

आइए, आइए !

[नीबू, नारंगी, चीनी आदि से शरबत बनाया जाता लालाजी और डॉ० रहमान पीते हैं। वर्माजी

[तिवारी बाहर आते हैं ।]

पं० तिवारी

[illegible] [illegible]रीलाल ! आप तो तीन दिन [illegible] ! [illegible] तो दूसरा ही दिन है और [illegible] डॉ० रहमान ?

लाला किशोरीलाल

भला कहीं ऐसा हो सकता है ?

डॉ० रहमान

हम लोग खाना नहीं खा रहे, थोड़ा पानी पी रहे हैं ।

लाला किशोरीलाल

हां, और उसमें थोड़ा-सा नीबू और थोड़ी चीनी मिला ली है, ताकि खाली पेट पानी नुकसान न करे ।

पं० तिवारी

(मुस्कराकर)

अच्छा ! तभी तो मैं सोचूं, ये लालाजी और डॉ० को क्या हो गया जो तीन-तीन दिन भूखे रहने को कहकर दूसरे ही दिन घुटने टेक रहे हैं !

लाला किशोरीलाल

अजी, तीन दिन की कौन बिसात ! मैं तो हफ्ते-भर का उपवास करने चला था । पर सोचा जाने दो, अपने प्रांत के प्रधानमंत्री, माननीय वर्माजी से ज़्यादा दिनों का उपवास करना भी तो उनका अपमान करना होगा ।

[वर्माजी मुस्कराते हैं ।]

पं० तिवारी

ठीक ! ठीक ! अच्छा किया आपने जो तीन ही दिनों का किया !

आनन्द

(पास में पड़ी हुई टोकरी से एक गाजर उठाकर)

चाचाजी, यह गाजर लीजिए।

लालाजी

एँ! गाजर?

आनंद

यह तो अन्न नहीं है।

स्वामीजी

हां, यह तो अन्न नहीं है।

सरदार दलजीतसिंह

इसे तो खा सकते हैं आप।

लाला किशोरीलाल

हां, यह तो खा सकता हूं। (गाजर ले लेते हैं।) क्यों डॉ० रहमान?

डॉ० रहमान

हां, हां, जरूर!

स्वामीजी

(गाजर, मूली की टोकरी उठाकर)

आप भी लीजिए न, डॉ० रहमान!

डॉ० रहमान

(टोकरी लेते हुए)

अच्छा भाई, लाइए, आप लोग कहते ही हैं तो—वैसे तो जरा भी नहीं!

आनंद

पंडितजी, आप कुछ न लेंगे?

न।

आनंद

और आप, वर्माजी ? शरबत तो लीजिए।

वर्माजी

ठीक है, आनंद, मज़े में हैं हम। अब सिर्फ एक ही रोज़ की तो बात है।

लाला किशोरीलाल

(गपागप गाजर खाते हुए)

हां जी, जब दो रोज़ बिना खाए निकाल दिए तो क्या हम लोग और एक दिन नहीं रह सकते ! (टोकरी में से मूली निकालकर) गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा ने हमें मन पर काबू रखना तो सिखा दिया। (आनन्द सब्ज़ी की दूसरी टोकरी अपने चाचा को पकड़ा देता है। लालाजी बेतहाशा खाए जा रहे डॉ० रहमान कुछ संभलकर खाते हैं। सब जने मुस्कराते हैं।) रीर मन के बस होना चाहिए, मन शरीर के बस नहीं।

वर्माजी

दुरुस्त ! बिलकुल दुरुस्त !

स्वामीजी

(आनन्द को ठेलकर)

अहा हा ! क्या बात कही !

लाला किशोरीलाल

चालीस करोड़ आदमी अगर आज अपने मन पर का[illegible] ा जाएं तो अंग्रेज़ एक मिनट में हिन्दुस्तान छोड़कर भा[illegible] ाएगा !

स्वामीजी

वह कैसे, लाला किशोरीलाल ?

आनंद

चाचाजी का मतलब है स्वामीजी, कि अगर चाल
करोड़ हिन्दुस्तानी अपने मन पर काबू पा जाएं और शरव
गाजर, मूली वगैरह-वगैरह खा-पीकर तीन-तीन दिन के वि
उपवास रख लें तो हमारी जो अंग्रेज सरकार है न—जो स
समुन्दर पार से आकर दो सौ साल से हम पर राज कर र
है—वह घबराकर भाग जाएगी !

[सब लोग ज़ोर-ज़ोर से हंसते हैं।]

लाला किशोरीलाल

(बौखलाकर)

आनंद ! तुम मजाक उड़ा रहे हो उपवास का ?

आनंद

नहीं चाचाजी, उपवास का मजाक मैं नहीं उड़ा रह
(कुछ लोग हंसते हैं।) अगर मैं मज़ाक उड़ाना चाहता तो त
दिन का उपवास मैं भी न रख लेता ?

[आनन्द के साथी हंसते हैं।]

वर्माजी

(उठकर आनन्द की ओर बढ़ते हुए)

आनंद, तुम्हारी क्या उम्र होगी ?

आनंद

फरमाइए, आप क्या कहना चाहते हैं ?

पं० तिवारी

तुम समझते हो, स्वराज हासिल करने के लिए
राजनीति की जरूरत है वह सब तुममें मौजूद है

एक लीडर हो, तुम्हीं एक देशभक्त हो, बाकी के सब घास झीलते है—क्यों ?

आनंद

मैंने तो यह कभी नहीं कहा, पंडितजी, कि मैं कोई लीडर हूं। आपकी तरह हमारे तमाम लीडर तो जेलों में बन्द हैं। मैंने तो सिर्फ गांधीजी के वचन दुहराए थे कि तमाम लीडरों के पकड़े जाने के बाद देश हताश होकर न बैठ जाए, हर कोई अपने को लीडर समझे और पिछले नेताओं के अधूरे काम को पूरा करे। मैं कहीं का लीडर नहीं। पर बिना लीडरों के भी हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठ जाऊंगा। मैं कोई लीडर नहीं। मैं कोई नेता नहीं, पर मैं देशभक्त ज़रूर हूं। और एक देशभक्त के नाते मैं वही करूंगा जो हरएक देशभक्त को करना चाहिए जबकि उसके देश को आग लगी हो।

वर्माजी

यानी तुम किसीके सिर पर डंडा मारोगे।

[कुछ लोग हंसते हैं।]

आनंद

जी हां, मैं किसीके सिर पर डंडा मारूंगा ! किसीपर डंडा मारकर ही यहां आया हूं और बाहर निकलकर फिर मारूंगा !

वर्माजी

(व्यंग्य के साथ)

यही तो गांधीजी की अहिंसा है ! इसी अहिंसा का तो पाठ गांधीजी आज पच्चीस साल से सबको पढ़ाते आए हैं !

आनंद

गांधीजी ने हमें आत्मसम्मान सिखाया है, आत्मरक्षा

सिखाई है, 'वीरों की अहिंसा' का पाठ पढ़ाया है ।

वर्माजी

पाप का नाश करो, आनंद, पापी का नहीं । गीता यह कहती है ।

आनंद

गीता मैंने भी पढ़ी है, वर्माजी !

लाला किशोरीलाल

(भतीजे को मुस्काते हुए)

माननीय वर्माजी ।

[आनन्द को यह दखल अच्छा नहीं लगता ।]

आनंद

गीता में लिखा है :

स्वामीजी

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

आनंद

देखा आपने ! पापी का नाश करो, पाप अपने-आप नष्ट हो जाएगा । जिस तरह हमारे कपड़े फट जाने से या उनमें धब्बे लग जाने से हम कपड़े बदल लेते हैं, खुद नहीं बदल जाते, इसी तरह आत्मा भी शरीर के खराब हो जाने पर शरीर बदल लेती है, खुद नहीं मिटती । आत्मा अमर है । जालिम या पापी के सिर पर डंडा मारने से हम उसकी आत्मा को नहीं मिटाते—वह तो अमर है—हम सिर्फ उसके शरीर को, उसके जिस्म को मिटा रहे है, ताकि वह जिस्म वह शरीर दोबारा जुल्म या पाप करने की जुर्रत न करे ।

[आनन्द के साथी तालियां बजाते हैं ।]

यही बात महाभारत के अवसर पर कुरुक्षेत्र के बीच भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कही थी। श्रीमद्भगवद्गीता यही कहती है। अर्जुन ने तो कौरवों पर तीर चलाने से मुँह मोड़ लिया था, पर जब श्रीकृष्ण ने उन्हें समझाया कि सत्य के लिए, न्याय के लिए, पापों का नाश करना अधर्म नहीं, धर्म है; शरीर का मोह त्यागकर आत्मा की फिक्र करो, जो अमर है, जिसका नाश कोई नहीं कर सकता—तभी वीर अर्जुन ने गांडीव धनुष उठाया था—और तभी भारत में महाभारत हुआ था।

रही है, और कमरे के तमाम कैदी, पूरी तादाद में, बराम
में निकल आए हैं। लाला किशोरीलाल, भूख से बेजा
खाने के लिए उतावले हो रहे हैं; सिर्फ आनंद कहीं दी
नहीं पड़ता है।]

लाला किशोरीलाल

(थाली पर बैठते हुए)

अहा! सच कहा है किसीने—'अन्न बिना भगवान कहां!
चलो हमारा तीन दिन का उपवास आज खत्म हुआ। (परोस
वाले से) ला भई, जरा दिल खोलकर परोस न! तेरे घर क
भंडार तो है नहीं, जो खाली हो जाएगा! थोड़ा भात औ
डाल।

पं० तिवारी

अरे, अरे, लालाजी, इतनी उतावली न कीजिए खाने
लिए! पहले…

लाला किशोरीलाल

(इशारा समझकर)

हां, हां, जी, जरूर, जरूर! मुझे तो याद ही न रहा!
(थाली पर से उठ जाते हैं।)

दास बाबू

(सरदार दलजीतसिंह से)

कैसा याद रहेगा! कोचूमर निकल गया तीन दिन
बेचारे का!

सरदार दलजीतसिंह

पेट तो आधा ही रह गया!

दास बाबू

तारपोरे रोज़-रोज़ गाजर-मूली खाते

[वर्माजी आगे बढ़ते हैं। सब लोग गम्भीर होकर खड़े हो जाते हैं।]

### वर्माजी

भाइयो! (लाला किशोरीलाल ताली बजाकर वर्माजी क गत करते हैं। वर्माजी तालियों के लिए इशारे से मना करते हैं।) इयो! यह समय तालियां बजाने का नहीं। हमारे आदर य, हमारे पूज्य महात्मा गांधी मृत्युशैय्या पर पड़े हुए हैं ज उनके उपवास का चौथा दिन है। महात्माजी ने हिंदु ान के लिए, हिंदुस्तानियों के लिए जो कुछ किया है वह एव हात्मा ही कर सकता था। एक गुलाम देश में पैदा होक धीजी ने उनके मुरझाए हुए दिलों को ताज़गी बख्शी है नकी सहमी हुई रूह को हिम्मत बंधाई है। उन्होंने हा ामी की ज़ंजीरें तोड़ फेंकने का आदेश दिया है। सत्य औ हिंसा के हथियारों से स्वराज हासिल करने का तरीका हा ोजी ने सिखाया है। और आज वही सत्य और अहिंस मूर्ति, हमारे प्रिय बापू, ज़ालिम अंग्रेज़ सरकार की कै पड़े हुए चार रोज़ से उपवास कर रहे हैं। महात्माजी पू क स दिन का उपवास करेंगे। उनकी यह उम्र नहीं कि न दिन का भी उपवास करें। पारसाल उनकी ७३वं यंती मनाई गई थी। इक्कीस दिन का उपवास वे कैसे करेंगे श्वर ही जानता है। हममें से बहुतों ने तीन दिन का उपवा खकर गांधीजी से हमदर्दी जतलाई है। हम जानते थे इस रकार घबराएगी नहीं। हमने सरकार को डराने के लि ह भूख-हड़ताल नहीं की थी। हमने उपवास सिर्फ इसलि खा था कि हमें गांधीजी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना कर मौका मिले। भूखे पेट की गई प्रार्थना में असर होता है

भगवान उनकी रक्षा करें! (स्वामीजी आगे बढ़ते हैं) हां, शुरू कीजिए।

[स्वामीजी हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं और महात्मा जी के उपवास पर, उनकी खतरनाक हालत पर खुद की बनाई हृदय-स्पर्शी कविता गाकर सुनाते हैं।]

स्वामीजी

(आंखें बंद किए)

सत्य, अहिंसा का सैनिक,
है पड़ा अनोखी आन लिए।
अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।

एकमात्र जीवन की आशा,
टिकी हुई है जिसपर श्वासा।
हो स्वतंत्र यह देश हमारा,
भूखे सैनिक ने ललकारा।

जर्जर तन है, शान्ति भरा मन,
मातृभूमि का मान लिए।
अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।

खादी के छोटे टुकड़े पर,
पड़ा हुआ है उसका पिंजर।
कांप रहा आकाश, धरातल,
पर है पड़ा हुआ वह निश्चल।

उसकी निःश्वासें निकलीं-
विद्युत् का सा गान लि

अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।

मेरे नौजवान उत्साही,
वीरभूमि के वीर सिपाही।
छोड़ क्षणिक उत्साह बढ़ो अब,
देख चुके हो बहुत तबाही।

भेज रहा संदेश देश को,
गीता और कुरान लिए।
अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।

आंखें बन्द, शांत है योगी,
यद्यपि थकित, क्लांत है योगी।
फिर भी तो उत्साह न कम है,
मर मिटने का उसे न गम है।

मन्थर गति से नाड़ी चलती,
है अमरत्व महान लिए।
अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।

उसके इन उपवासों में ही,
ज्वाला भरी उसासों में ही।
गूढ़ शांति के भाव भरे हैं,
दलित वर्ग के घाव भरे हैं।

पीड़ित भारत के हित जीवित,
पीड़ित आकुल प्रान लिए।

अंतर में ज्वाला जलती है,
अधरों पर मुस्कान लिए।[1]

[स्वामीजी की इस कविता से और उनके पढ़ने के ढंग से स[ब] लोग प्रभावित हो जाते हैं। सबके मन में शोक छा जाता है। कुछ लोग तो स्वामीजी की आँखों से आँसू बहते देख [रो] पड़ते हैं।]

### वर्माजी

(धीमी और भर्राई हुई आवाज़ में)

सब लोग एक मिनट मन ही मन गांधीजी की रक्षा और हिफाजत के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

[सब लोग चुप खड़े, हाथ जोड़े ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। अ[ब्दुल] रहमान अपने खुदा से दुआ माँगते हैं।]

### पं० तिवारी

महात्मा गांधी की···

### सब लोग

जय!

### वर्माजी

महात्मा गांधी···

### सब लोग

जिन्दाबाद!

[सब लोग खाने के लिए थालियों पर बैठते हैं।]

### लाला किशोरीलाल

(आनंद की बहीं [illegible] न देखकर)

---

१. यह कविता श्री रामपूर्ति चतुर्वेदी की लिखी हुई है, जो [illegible] के सन् १९४३ वाले उपवास के अवसर पर ही लिखी थी। [illegible] उनका आभारी हूँ।

अरे ! आनंद कहां गया ?

[सब लोग इधर-उधर देखने लगते हैं। सिर्फ स्वामीजी निश्चित बठे खा रहे हैं।]

डॉ० रहमान

हां साहब, आनंद नहीं दिखाई दे रहे !

वर्माजी

अरे ! आनंद कहां है ?

लाला किशोरीलाल

(ज़ोर-ज़ोर से आनंद के लिए आवाज़ लगाते हुए) आनंद··· नंद···ओ···आनंद ! ···

[इसी समय जेल का बड़ा घंटा ज़ोरों से बज उठता है। सब लोग चकित हो एक-दूसरे का मुंह देखने लगते हैं। बाईं दीवार के दरवाज़े से, अपने साथ कुछ हथियारबंद सिपाही लिए और साथ में जलती हुई मशालें भी लिए, जेलर अन्दर प्रवेश करता है।]

वर्माजी

क्या बात है ? क्या हुआ, मिस्टर जेलर ?

जेलर

(इधर-उधर ढूंढ़ता हुआ, जल्दी में)

आनंद···आनंद ! ···

लाला किशोरीलाल

(घबराकर उठते हुए)

क्या हुआ आनंद को ?

जेलर

आनंद जेल से भाग निकला है !

वर्मांजी

(उठकर)

जेल से भाग गया ? कब ?

जेलर

पता नहीं, शायद रात को भागा है ।

[जेलर और सिपाही आनद की खोज मे अन्दर के कमरे जाते हैं ।

बरामदे मे तहलका मच जाता है । स्वामीजी के अल बाकी सब थाली छोड़कर उठ खड़े हो जाते हैं । आनद अलफाज़ सबको याद आते हैं ।]

आनंद की आवाज़

'हमें बदला लेना है, चाचाजी ! हमें चेतसिंह की फां का बदला लेना है ! हमें जलियांवाला बाग का बदला ले है ! अयोध्या की बेगमों और बहादुरशाह पर ढाए गए जुल का हमें बदला लेना होगा ! भगतसिंह और यतीन्द्र सेन के ख की हम कीमत मांगेंगे ! चिमूर, आष्टी और बलिया में बह हुई लहू की नदियां अब रंग लाकर रहेंगी ! अंग्रेजी राज अब हम ईंट से ईंट बजा देंगे ! चाचाजी, यह गदर है, गदर

[स्वामीजी जोर से अट्टहास करते हैं । जेलर और सिपाही बरा से होते हुए, बायें दरवाजे से बाहर चले जाते हैं ।]

डॉ० रहमान

इन्कलाब···

सब लोग

जिन्दाबाद !

सरदार दलजीतसिंह

इन्कलाब···

सब लोग

ज़िन्दावाद !

लाला किशोरीलाल

इन्कलाब…

सब लोग

ज़िन्दावाद !

वर्माजी

महात्मा गांधी की…

सब लोग

जय !

[मंच पर धीरे-धीरे लाल आभा छा जाता है, मानो नज़दीक—कहीं आग लग गई हो। जेल के बाहर, बढ़ती हुई जनता की आवाज़ें आ रही हैं। लोग 'इन्कलाब ज़िन्दावाद', 'भारत माता की जय' और 'गांधीजी की जय' के नारे लगा रहे हैं।

जेलर, वॉर्डन और एक-दो सिपाही भागकर, बायें दरवाज़े से बरामदे में घुस जाते हैं।]

वर्माजी

क्या बात है, जेलर ? यह शोर कैसा ?

जेलर

(डर से कांपता हुआ)

आनंद आ रहा है, शहर के लोगों को भड़काकर, भीड़ ी भीड़ लिए, वह जेल के दरवाज़े पर आ पहुंचा है ! चाइए, वर्माजी, हमारी रक्षा कीजिए ! हम बेकुसूर हैं !

स्वामीजी

ठहरो, बच्चू ! तुम्हारी रक्षा मैं करूंगा !

[स्वामीजी आस्तीन चढ़ाते हुए जेलर और वॉर्डन की ओर बढ़ते हैं और उनकी गर्दन अपने दोनों हाथों मे पकड़ लेते हैं। डॉ० रहमान और दास बाबू सिपाहियों को धर दबाते हैं।

दाईं दीवार के बंद दरवाज़े पर आनंद, जनता को लिए आ पहुचता है। सबके हाथों में बर्छी, भाले, तलवार लाठियां, पत्थर आदि हैं। आनंद और उसके साथी दरवाज़ा तोड़ रहे हैं। सब ओर नारे लग रहे हैं, जयघोष हो रहा है, और ऐसा जान पड़ता है कि बागी जनता जेल के कैदियों को अभी छुड़ा ले जाएगी।

दरवाज़ा आखिर टूट पड़ता है। आनंद और उसके साथी अन्दर घुस आते हैं। आनद और स्वामीजी एक-दूसरे के गले लगते हैं। जेलर और वॉर्डन पर मार पड़ रही है।]

**आनंद**

(विजयपूर्वक)
इन्कलाब···

**सब लोग**

ज़िन्दाबाद !

*परदा*

# राम-रहीम

## पात्र

डॉ० अनिलकुमार सेन
नीलिमा : उनकी पत्नी
राम : उनका लड़का
काली : उनका नौकर
रहीम : एक मुसलमान लड़का
अनवरुद्दीन : उसका पिता
आठ-दस हिन्दू लोग

स्थान : कलकत्ता—जहाँ से मुस्लिम लीग का 'डाइरेक्ट ऐक्शन' शुरू हुआ था और जहाँ हिन्दू-मुसलमानों ने एक-दूसरे के खून से होली खेलकर हिन्दुस्तान के पवित्र नाम पर धब्बा लगाया था।

समय : १६ अगस्त, १९४६ की शाम।

[डॉ० अनिलकुमार सेन की बैठक। कमरे में सोफासेट और अन्य फर्नीचर है। सोफे के किनारे ऊँचे डण्डेवाला लाल शेड का एक बिजली का कंडील रखा हुआ है। पीछे की दीवार में बीचोबीच एक दरवाजा है, जो बाहर सड़क पर खुलता है। बाईं ओर का दरवाजा अन्दर जाने के लिए है। दाईं ओर का दरवाजा दवाखाने में खुलता है, और इस दरवाजे से अन्दर रखे हुए कुछ नक्शे और दवाइयों की आलमारी दिखाई पड़ती है।

परदा उठने के पाँच सेकण्ड बाद घर का बूढ़ा नौकर, काली, एक खाली थैली और खाने का कटोरा लिए बायें दरवाजे

(रसोईघर की ओर से) कमरे में प्रवेश करता है, और पिछले दरवाज़े की ओर (जो वाहर सड़क पर खुलता है) वढ़ने लगता है। पर इसी समय अन्दर से मालकिन की आवाज़ सुनकर रुक जाता है।]

नीलिमा की आवाज़

कालो, कालो···सुनना ज़रा !···

कालो

हां, वोउमा[1], वोलो।

नीलिमा की आवाज़

मैंने कहा—और रसगुल्ले लाना मत भूल जइयो !

कालो

अरे वाप रे ! वोउमा, इत्ती सारी मिठाइयां तो लाने जा रहा हूं ! रसमलाई भी आ रही है, फिर रसगुल्ले की ऐसी ज़रूरत है ? आज के दिन विना रसगुल्ले के···

नीलिमा की आवाज़

नहीं, रसगुल्ले के विना नहीं चलेगा, समझा ? (नीलिमा कमरे में प्रवेश करती है। उसकी उम्र तीस साल के करीव होगी। लाल पाड़ की सफेद सूती साड़ी वंगला ढंग से पहने हुए है। मांग में सिंदूर भरा है। माथे पर टीका है। वदन पर मामूली-से गहने और सादा चोली है। नीलिमा विशेप सुन्दर तो नहीं, पर भली अवश्य लगती है।) आज मेरे राम का जन्मदिन है ! सिवा रसगुल्ले के कोई मिठाई वह मुंह में नहीं रखता !

---

१. वंगला में वहू या मालकिन को 'वोउमा' कहकर पुकारते हैं। 'वोउ' यानी वहू।

कालो

बोउमा ! रसगुल्ले लेने के लिए मुझे चौरंगी जाना पड़ेग ···और वहां जोरों का झगड़ा चल रहा है।···कहीं···

नीलिमा

अरे, घबराता क्यों है इतना ? तुझे कोई नहीं छेड़ेगा, ज जा ! वे तो गुंडे लोग लड़ रहे हैं। आदमी देखकर मारते हैं

कालो

अजी नहीं, बोउमा, क्या कह रही हो ! गुंडों की लड़ा नहीं है यह ! यह तो हिन्दू और मुसलमान मार-काट कर रहे हैं तुमने सुना नहीं, जवाहरलाल नेहरू को अंग्रेजों ने बड़ा मंत्र बना दिया है, और सुनते हैं महात्मा गांधी को हिन्दुस्तान क बड़ा लाट-गोरनर बनानेवाले हैं, सो बस इसीपर मुसल मान लोग नाराज़ हो गए हैं, कहते हैं गांधीजी को नहीं जिन्न को लाट-गोरनर बनाओ !

नीलिमा

(मज़ा लेती हुई)

ऐसा !

कालो

हां। पर अंग्रेज़ सरकार ने मुस्लिम लीग की बात नहं मानी। और मानती भी कैसे ? इत्ते मुसलमान हैं तो इत सारे हिन्दू भी तो हैं ! इसीलिए सरकार उन्हें लाट-गोरन बना रही है।

[कालो की बातों में दिलचस्पी लेती हुई नीलिमा सोफे पर बै जाती है और पास में पड़ी हुई सलाइयां उठाकर स्वेटर बुनने लगती है।]

नीलिमा

अच्छा, तो अब गांधीजी को सरकार बड़ा लाट बना रही है ! यह सब तूने कहां सुना रे ?

कालो

अपने ड्राइवर शशी ने बताया, बोउमा ! उसके पास बंगला छापा आता है। ये सब खबरें अंग्रेज़ी में थोड़ी छपती हैं, बोउमा !

नीलिमा

(हंसी रोककर)

तभी !

कालो

और, बोउमा, शशी कह रहा था कि बड़ा लाट बनते ही गांधीजी, बड़े लाट की जो कोठी है न दिल्ली में—बड़ा अच्छा है उसका…ताजमहल…उसमें हरिजनों के लिए बड़ा भारी अस्पताल खोलनेवाले हैं। तुम कुछ भी कहो, बोउमा, पर गरीबों के लिए गांधीजी का दिल बड़ा दुखता है !

नीलिमा

हां, कालो, तभी तो सारा हिन्दुस्तान उनकी पूजा करता है। अच्छा, अब तू जाएगा ?

कालो

(चौंककर)

कहां ? चौरंगी ? (करुणाजनक चेहरा बनाता है।)

नीलिमा

(ममता के साथ)

आज राम का जन्मदिन है, कालो। क्या तू उसे रसगुल्ले नहीं खिलाएगा !

कालो

(हिम्मत करके)

खिलाऊंगा, बोउमा! क्यों नहीं खिलाऊंगा! इत्ता डरपो
थोड़ा हूं कि मुसलमानों से घबरा जाऊंगा। अरे, कोई मार
ही आएगा तो मेरे भी तो हाथ-पैर हैं! बूढा जरूर हूं, पर फि
भी काफी हूं। (कुछ सोचकर) पर बोउमा, ये मुसलमान लो
तो छिपकर पीछे से छुरा भोंक देवें! अगर कोई मेरे भी पी
से मार दे तो क्या करूंगा! अपने मुहल्ले के हलवाई के य
से ले आऊं रसगुल्ले!

नीलिमा

नहीं, नही, चौरंगीवाले दास की दुकान से ला। रसगु
बनाना तो सिर्फ वही जानता है।

कालो

बोउमा!

नीलिमा

तू जा, कोई नहीं मारेगा। अच्छे मुसलमान पीछे से हम
नही करते। अरे, जा भी··· (कालो जाने लगता है।) और दे
राम दिखाई दे तो भेज देना। शायद मुकर्जी के घर खेल र
होगा।

[कालो पीछे का दरवाजा खोलकर बाहर सड़क पर निकल जा
है। नीलिमा उठकर दरवाजा बन्द कर देती है और
आकर सोफे पर बैठती है, दरवाजे की घण्टी बजती है।
उठकर दरवाजे पर जाती है]

नीलिमा

कौन?

अनिल की आवाज़

मैं !

नीलिमा

(दरवाज़े में बने हुए सुराख में आंख लगाकर)

कौन ?

अनिल की आवाज़

मैं हूं, मैं !

नीलिमा

(पहचानकर भी न पहचानने का स्वांग करती हुई)

मैं कौन ?

अनिल की आवाज़

मैं हूं डॉक्टर अनिलकुमार सेन, इस घर का मालिक, ाम का पिता और...(नीलिमा दरवाज़ा खोलकर एक पट के छिप जाती है।) और नीलिमादेवी का यानी तुम्हारा !

[अनिल टोप उतारकर सिर झुकाता है, पर क़िसीको सामने न देखकर फौरन हैरत में पड़ जाता है। नीलिमा, पट की ओट से लपककर, दरवाज़ा बंद कर, पति के पीछे उसकी गर्दन से लटक जाती है, और खिलखिलाकर हंसती है। अनिल भी हंसता हुआ गोल घूमता है, फिर नीलिमा को लाकर सोफे पर गिरा देता है। दोनों हंसते हैं।]

नीलिमा

बड़ी देर कर दी आज ! कहां थे ?

अनिल

अस्पताल में ही था। गज़ब हो रहा है शहर में ! फसाद हुत बढ़ गया है। (नीलिमा पति का कोट उतारकर खूंटी से टांग

देती है।) खबर है, सुबह से अभी तक कई हज़ार आदमी मा
गए हैं। अस्पताल में ज़ख्मियों का तांता बंधा हुआ है। द
लेने को आज फ़ुरसत नहीं मिली! (थका हुआ अनिल धम
सोफ़े पर बैठ जाता है।)

नीलिमा

चलो, तुम्हारे मरीज़ों की संख्या तो बढ़ी! अंधा क्या चा
दो आंखें!

अनिल

बस्शो! नहीं चाहिए ऐसे मरीज़ मुझे! हर डॉक्टर य
ज़रूर चाहता है कि उसे खूब सारे मरीज़ मिलें, मगर यह को
डॉक्टर नहीं चाहेगा कि कोई मर्ज़ फैले और लोगों को अपना
शिकार बनाए। राहचलते बेचारे गरीब लोग मारे जा रहे हैं
किसीकी पीठ में छुरा भोंका गया तो किसीका सिर फोड़ दिय
गया! अभी शाम को ही एक केस चौरंगी से आया है। ए
सेठानी बेचारी अपने तीन साल के बच्चे को लिए रिक्शा
चली जा रही थी कि गली से दो मुसलमान लौंडों ने हमल
किया। रिक्शावाला तो रिक्शा छोड़कर भाग गया, पर सेठानी
और उसका बच्चा फंस गए। बच्चे की बोटी-बोटी कर द
गई। सेठानी का पेट चीर दिया गया। सारी आंत बाहर निकल
पड़ी!

नीलिमा

ओह! औरतों को भी नहीं छोड़ते कम्बख्त ये गुंडे!

अनिल

नहीं, नीलिमा, यह गुंडों की लड़ाई नहीं। यह हिन्दू-मुसल
मानों का झगड़ा है। मुस्लिम लीग का यह 'डाइरेक्ट ऐक्शन' है।
इस लड़ाई की तैयारी मुसलमान कई महीनों से कर

ग़गर मामूली झगड़ा होता तो ज़्यादा से ज़्यादा दस-बीस जानें जातीं। पर हज़ार आदमियों का एक ही दिन में मारा जाना मामूली बात नहीं।

नीलिमा

अच्छा तमाशा है! लीडर लोग खुद तो गद्दे पर कुलांटे ग़ा रहे हैं और मर रहे हैं बेचारे गरीब हिन्दू और मुसलमान! रकार क्यों नहीं ऐसे झूठे लीडरों को पकड़कर जेलखाने में ंस देती, जो भोले-भाले हिन्दुस्तानियों को आपस में लड़ मरने के लिए भड़का रहे हैं?

अनिल

यह सवाल सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, नीलिमा! सभी अक्लमंद आदमी आज यही पूछ रहे हैं। सैकड़ों सालों से हिन्दू और "सलमान भाई-भाई की तरह रहते आए हैं। झगड़ता कौन ? क्या दो सगे भाई आपस में कभी नहीं लड़ बैठते? र इसका यह मतलब तो हरगिज़ नहीं कि वे लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। शहर में फिर भी उतना पता नहीं चलता, मगर गांवों में जाकर देखो तो तुम्हें मालूम हो जाएगा, ये दोनों कौमें कितनी मिल-जुलके, किस प्यार और मुहब्बत के साथ ज़िन्दगी बसर करती हैं! यहां तक कि आपस में रिश्ते भी बदे जाते हैं।...तुमने मुहम्मदखां को तो देखा ही होगा?

नीलिमा

कौन, वे नोआखालीवाले? जिन्हें तुम चाचा कहते थे?

अनिल

हां, हां, वे ही। अब बताओ, मैं हिन्दू, वे मुसलमान; फिर वे मेरे चाचा कैसे हुए? मगर यही तो बात थी! जब

कभी पिताजी गांव छोड़कर बाहर जाते तो सारा घ
मुहम्मदखां के सुपुर्द कर जाते। और मुहम्मदखां भी हम लोग
की ऐसी देखभाल करते, मानो वे सच मे हमारे चाचा थे
*एक बार मुहम्मदखा के मंझले लड़के रमज़ानी को पिताज*
ने गली में जुआ खेलते पकड़ लिया। क्या बताऊं तुम्हें, उन्हो
उसे इस कदर पीटा, इस कदर पीटा कि उसकी हड्डी-पसल
एक हो गई! मगर मजाल थी मुहम्मदखा की या उनव
बीवी की, जो चू-चरा भी करते। पिताजी को मुहम्मदख
बड़े भाई की तरह मानते थे। रमज़ानी की जब शादी हु
तो बारात मुहम्मदखां के घर से नहीं, हमारे घर से निकली

नीलिमा

*अच्छा!*

अनिल

गांवों में अभी भी हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे
शादी-व्याह और मौत-मैयत मे, एक-दूसरे के त्योहारों
शरीक होते हैं।

नीलिमा

*क्यों नही! आखिर पांच पीढियां पहले सारे मुसलमा*
*हिन्दू ही तो थे।*

अनिल

*और क्या! आखिर वे सभी लोग कोई बाहर से थो*
*ही आए थे। वे तो हममे से ही, हमारे ही भाई थे।*

नीलिमा

पर तुम देखना, यह बीमारी अब गांवों में
फैलेगी।...मैं पूछती हू, मुस्लिम लीग के इन लीडरों को क्य
खब्त सवार हो गया है जो ये लोग मुसलमानों क

ो खिलाफ भड़का रहे हैं ?

अनिल

ऐसा न करें तो उनकी लीडरी न छिन जाए
ं० नेहरू और मौलाना आज़ाद के सामने जिन
छेगा ? और फिर अंग्रेज़ सरकार भी तो यह
के हिन्दू और मुसलमान आपस में सदा लड़ते ह
हिन्दुस्तानियों को स्वराज देने की कभी नौबत
ाइसराय और ब्रिटिश पार्लियामेण्ट को यह कह
ो मिल जाएगा कि हम क्या करें, हम तो तुम ि
ो स्वराज दे देने को तैयार हैं, पर तुम्हीं लोग
हे हो, तुम लोगों में एकता नहीं, देश-भर में
ार-धाड़ मचा रखी है, तुम लोग राज्य की व
सकोगे, तुम हिन्दुस्तानी स्वराज के काबि

नीलिमा

रुस्त है। अंग्रेज़ क्यों चाहेगा कि हिन्दुस्ता
ा चिड़िया को छोड़कर उसे विलायत का ि
ड़े—विलायत, जहां की ज़मीन में निरा कोयल

[अनिल हंसता है। नीलिमा भी मुस्कराती है।]

अनिल

कालो···ओ कालो !···

नीलिमा

क्यों, क्या चाहिए ?

अनिल

क्या आज चाय नहीं मिलेगी हमें ?

नीलिमा

क्यों नहीं मिलेगी ! कालो को मैंने मिठाई ला

भूल गए, भ्राज मेरे राम का जन्मदिन है ?

अनिल

(व्यंग्य करता हुआ)

'मेरे राम का !' जैसे राम हमारा कोई नहीं हुआ ! जी, भूलती हो, राम पहले मेरा बेटा है, फिर तुम्हारा !

नीलिमा

रहने दो, संतान पर हमेशा मां का हक ज्यादा होता है

अनिल

क्यों भई !

नीलिमा

इसलिए कि संतान मा के पेट में नौ महीने रहती है कोई मर्द तो नौ महीने तक एक बच्चे को अपने पेट में रखक दिखा दे ! पेट में तो दूर रहा, तुम्हारे अस्पताल में ही अग कोई मरीज़ आठ रोज़ टिक जाता है तो तुम उससे महीने-भ का किराया वसूल कर लेते हो। बोलो, सच है या नहीं ? मैं राम को नौ महीने पेट मे रखा, कभी तुमसे किराया मांगा

अनिल

(मुस्कराकर)

तुमने तो किराया पेशगी ले लिया था, फिर और क्य मांगती ?

नीलिमा

(शर्माकर)

चलो !

अनिल

(मुस्कराता है। फिर सहसा कुछ सोच

नीलिमा !

नीलिमा

क्या बात है ?

अनिल

तुमने कालो को रसगुल्ले लाने चौरंगी तो नहीं भेज
या ?

नीलिमा

(घबराकर)

हां, वहीं भेजा है ! क्यों ?

अनिल

यह अच्छा नहीं हुआ ! चौरंगी पर बड़ी मार-काट मची
ई है।

नीलिमा

वह घबरा तो ज़रूर रहा था। मैं समझी मामूली दंगा
ीलिए उसे दास की दूकान से रसगुल्ले लाने को कहा,
···पर वह खुद ही नहीं जाएगा। बड़ा डरपोक है।

अनिल

और राम से भी कह दो कि अभी कुछ रोज़ स्कूल जाना बंद
र दे। बाहर सड़क पर अकेले निकलना भी खतरे से खाली
हीं। कहां है, राम नहीं दिखाई दे रहा ?

[दरवाज़े पर ज़ोरों की दस्तक पड़ती है। कालो शोर मचाता
ाई देता है।]

कालो की आवाज़

बोउमा ! बोउमा ! डॉक्टर बाबू ! ···बोउमा ! ···डॉक्टर
बू ! ···

[अनिल और नीलिमा दरवाज़े की ओर देखते हैं।]

नीलिमा

(पति से)
कालो है !…

[नीलिमा उठकर जाती है और दरवाजा खोल देती है। कालो—लहूलुहान, बदहवास हालत में, अंदर प्रवेश करता है। उसे देख नीलिमा और अनिल चकित रह जाते हैं।]

कालो

बोउमा !

नीलिमा

क्या बात है, कालो ?

कालो

बोउमा ! !

अनिल

(सोफे से उठकर)
अरे क्या हुआ, बोलेगा भी ?

कालो

(ज़ोरों से सांस लेता हुआ)
गजब हो गया !…गजब हो गया ! गजब हो गया बोउमा !…राम…

नीलिमा

(घबराकर)
राम को क्या हो गया ?

अनिल

(घबराकर)
क्या हुआ राम को ?

नीलिमा

[illegible] राम कहां है ?

अनिल

[illegible] से झकझोरता हुआ)
[illegible]

कालो

(रोकर)
डॉक्टर बाबू, राम को···मुसलमानों ने···मार डाला ! ···
[नीलिमा चीखकर सोफे पर बैठ जाती है।]

अनिल

राम कहां था ?

कालो

वह मुकर्जी के घर से लौट रहा था। रास्ते में मुसलमानों
घेर लिया। मैं उधर ही से जा रहा था। मैंने अचानक
ा···और 'पुलिस, पुलिस' चिल्लाता हुआ···राम को
के लिए मैं झपटा···पर मुझे (अपना माथा छूकर)···कहीं
सनसनाता हुआ···(अपना माथा छूकर)···एक पत्थर मेरी
ापड़ी पर आ लगा। (माथा छूता है। हाथ खून से लाल हो
ता है।) मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। राम···राम एक
ी में भाग रहा था···और बहुत सारे मुसलमान···उसका
छा कर रहे थे ! ···

अनिल

कौन-सी गली में ?

कालो

साईखाने की गली में !

कालो

नहीं, डॉक्टर बाबू, राम अब वापस नहीं मिलेगा ! उसका पीछा करनेवालों के हाथों में मैंने नंगे छुरे चमकते देखे थे। अपना राम अब नहीं मिल सकता ! (रोता है।)

अनिल

(बाज़ूवाले दफ्तर के कमरे से एक छुरा लाकर)

अपना बेटा मैं वापस लेकर आऊंगा ! कसाईखाने की गली के मुसलमानों को मेरे राम की कीमत चुकानी होगी !

[अनिल चलने को होता है। नीलिमा उसे रोकती है, पर अनिल की आखों में पागलों का सा नशा छा रहा है।]

नीलिमा

नहीं, तुम न जाओ !

अनिल

(दृढ़तापूर्वक)

मैं जाऊंगा ! ज़रूर जाऊंगा ! अपने राम को लेकर आऊंगा।

नीलिमा

(रोकर)

अपना राम अब नहीं मिलेगा ! तुम न जाओ ! बेटे को तो गंवाकर बैठी हूं ! क्या अब मुझे विधवा भी बनाओगे ?

अनिल

राम को लाने जा रहा हूं मैं ! राम को लाऊंगा ! राम को लाऊंगा ! अगर बच्चे को न ला सका तो आज इस छुरे को एक मुसलमान का खून पिलाऊंगा ! …

[अनिल अपने को नीलिमा से छुड़ाकर ज्योंही चलने को होता है, बाहर जोर का शोर मचता है और एक मुसलमान लड़का,

जो उम्र मे राम के ही बराबर, यानी दस साल का होगा, हाफता-चिल्लाता बैठक में घुस आता है। उसके पीछे कुछ हिंदू लोग लपके चले आते हैं, जो दरवाज़े पर ही रुक जाते हैं।]

कालो

कौन है ? अरे, कहां घुसा आ रहा है ?

लड़का

बचाओ, बचाओ मुझे…ये लोग मार डालेंगे मुझे !…

अनिल

कौन है तू ? क्या बात है ?

लड़का

(डर से कांपता हुआ)

ये हिंदू लोग मेरा पीछा कर रहे है !

एक हिन्दू

डॉक्टर बाबू, यह लड़का मुसलमान है। हम इसे मार डालेंगे। अपने मुहल्ले के कई बेगुनाह हिन्दुओं को, छोटे-छोटे बच्चों को मुसलमानों ने काटकर रख दिया है। हम भी इसे मौत के घाट उतारेंगे !…(लपककर लड़के को पकडना चाहता है।)

नीलिमा

ठहरो ! (वह हिंदू वही रुक जाता है।) ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है ! मेरे बच्चे को अभी-अभी कसाईखाने वाली गली मे ज़ालिम मुसलमानों ने मारा है ! अपने बेटे क मैं न्याय मांगती हूं। जब तक इस मुसलमान लड़के की छाती में मैं यह छुरा (अनिल के हाथ की ओर देखकर) न देखूंगी, मुझे चैन न आएगा ! (अनिल से) देखते क्या हो ! बस अपने बेटे के खून की कीमत !

[लड़का पीछे हटकर कमरे के एक कोने में दुबककर खड़ा हो जाता है और सहमी हुई आंखों से अनिल के छुरे को देखने लगता है।]

लड़का

नहीं···नहीं···मैंने कुछ नहीं किया! मैं···मैं···बेगुनाह हूं!···

[अनिल ज़ोरों से हंसता है।]

नीलिमा

बेगुनाह है! सांप के बच्चे, तू बेगुनाह है! तो हमारे राम ने ऐसा कौन-सा गुनाह किया था जो मुसलमानों को उस पर दया न आई?

[अनिल उस लड़के की हालत पर खुश होता हुआ, अपने बेटे की मौत का बदला लेने के लिए कमर कसता है। लड़के का एकदम से न मारकर पहले उसे खूब, सताने की ठानकर उसकी ओर बढ़ता है।]

अनिल

क्या नाम है, लड़के, तेरा?

लड़का

र···र···रहीम!

अनिल

रहीम! यह तो तेरे खुदा का नाम है। बड़ा प्यारा नाम!

[अनिल छुरा लिए आगे बढ़ता है। रहीम घबराकर दीवार से सिमट जाता है।]

रहीम

मुझे···मुझे न मारिए!···मैंने···कुछ नहीं किया!···मैंने

कुछ नहीं किया ! मुझे बचाओ ! ...

[रहीम कमरे में इधर-उधर भागता है। अनिल उसका पीछा करता है।]

अनिल

कहां भागता है ! देखता है मेरे हाथ में यह छुरा ? तेरा खून पीने के लिए यह बेचैन हो रहा है ! आज इसे तेरा खून पिलाऊंगा मैं !

[रहीम फिर भागता है। अनिल फिर पीछा करता है। काफी देर तक दौड़-झपट होती है।]

रहीम

नहीं...मुझे छोड़ दीजिए...मैंने कुछ नही किया...मुझे न मारिए ...अम्मी ! (अनिल छुरा मारने को लपकता है, पर रहीम दौड़कर नीलिमा से लिपट जाता है।) अम्मी !...मुझे बचाइए ! अम्मी ! अम्मीजान ! (नीलिमा के सीने में सिर छिपा लेता है।)

[अनिल झपटकर रहीम की पीठ में छुरा मारना चाहता है। नीलिमा अनिल का हाथ पकड़ लेती है।]

नीलिमा

नही ! नही ! बस, बहुत हुआ ! बच्चे को न मारो ! मुझे ऐसा लगता है कि मेरा राम मेरी छाती से लिपटा हुआ है !

काली

(चौंककर, साश्चर्य)

बोउमा !

अनिल

(चौंककर, साश्चर्य)

अनवरुद्दीन

नहीं बहिन, कभी नहीं !

[अनवरुद्दीन उम्र में मंजिल के बराबर, यानी पैंतीस या छत्तीस साल का है। शेरवानी और टोपी पहने हुए है।

अनवरुद्दीन और उसके साथ राम को देखकर घरवाले क्षण-भर को चकित रह जाते हैं। राम लपककर नीलिमा से लिपट जाता है। रहीम अनवरुद्दीन से लिपटता है।]

नीलिमा

राम ! मेरा राम !

राम

मां ! मां ! !

रहीम

अब्बा !

अनवरुद्दीन

बेटा ! ...कुत्ते-बिल्लियों की तरह, जाहिलों की तरह, शैतानों की तरह लड़ना हमीं मर्दों के बदफेल हैं ! इंसान कहलानेवाले हिन्दुओं और मुसलमानों की अक्ल आज घास चरने गई है ! तभी तो सदियों से भाई-भाई की तरह रहनेवाली ये दोनों कौमें आज एक-दूसरे को पानी में देख रही हैं। पर कोई फिक्र नहीं ! लड़ने दो ! यह तीन दिन का बुखार है ! जब तक हमारे मुल्क में मां नाम की एक भी हस्ती रहेगी हमें कोई डर नहीं। अंग्रेज सरकार की है यह सारी करतूत ! दो भाइयों को आपस में लड़ाना उसे खूब आता है। मगर यह याद रहे अंग्रेज को, कि ये दोनों भाई हिन्दुस्तान में ही पैदा हुए हैं और उन्हें यहीं मरना भी है। भले ही एक हिंदू और दूसरा मुसलमान हो, मगर हैं दोनों हिन्दुस्तानी !

और जिस दिन ये दोनों भाई मिल बैठेंगे, उस दिन अंग्रेज बहादुर को हिन्दुस्तान की सरज़मीन में एक मिनट भी रहना दुश्वार हो जाएगा !

[अनिल लपककर अनवरहुसैन के गले मिलता है।]

अनिल

खां साहब, मैं आपका बहुत एहसानमन्द हूं ! आपने मेरे बच्चे की जान बचा दी !

अनवरहुसैन

जान उसने बचाई है (ऊपर को इशारा करता है।) आपके बच्चे की, जिसने आदमी के साथ-साथ औरत को भी पैदा किया। जिसने अगर आदमी की खोपड़ी में जल खाया हुआ दिमाग रखा, तो औरत के सीने में ममता-भरा दिल भर दिया ! जब आपका राम, रहीम की मां के सीने से जा लिपटा तो किसी मुसलमान गुण्डे की ताब न हुई कि उसका बाल भी बांका कर सके ! थोड़ी देर बाद जब खबर आई कि हमारे रहीम को हिन्दुओं ने मार डाला, तो मेरा दिमाग फिर गया पर रहीम की मां ने मुझसे कौल लिया कि सही-सलामत इस बच्चे को (राम को ओर इशारा कर) इसके घर पहुंचा दूं। खुदा का फजल है, डॉक्टर साहब, जो उसने हम दोनों के हाथ दो मासूम बेगुनाहों के खून से गन्दे न होने दिए !

अनिल

आप सच कहते हैं, खां साहब ! हमें उसका (ऊपर को इशारा कर) आभारी होना चाहिए !

अनवरहुसैन

अच्छा, डॉक्टर साहब, बहिनजी...(

नीलिमा

ऐसे ही नहीं खां साहब, आज हमारे राम का जन्मदिन ! कुछ खाकर जाना होगा । मैं अभी आई ।

[नीलिमा बायें दरवाज़े से अन्दर को भाग जाती है । कालो भी ता है । दरवाज़े पर की भीड़ चकित खड़ी है ।]

अनवरुद्दीन

(खुश-खुश)

अच्छा तो भाई, ज़रूर खाएंगे ! (सोफे पर बैठता हुआ) पका राम आज से हमारा भी तो हुआ !

अनिल

(अनवरुद्दीन के पास बैठकर)

ां नहीं, खां साहब, आज से हम दोनों के लिए राम ीम में कोई फर्क नहीं रह गया ।

[नीलिमा और कालो मिठाइयों के थाल लिए आते हैं । नीलिमा सबको मिठाई देती है । अनवरुद्दीन मिठाई का एक टुकड़ा राम के मुंह में डालता है । नीलिमा रहीम को खिलाती है । फिर अनवरुद्दीन और अनिल मिठाई एक-दूसरे को अपने हाथों से खिलाते हैं । नीलिमा खुश है । कालो भी । सबकी आंखें खुशी से नम हो गई हैं ।]

परदा

## अब तक प्रकाशित ८८ हिंद पॉकेट बुक्स

### उपन्यास

| | |
|---|---|
| आभा | भूल |
| बीते दिन | अधूरा सपना |
| बड़ी-बड़ी आंखें | कलाकार का प्रेम |
| बर्फ का दर्द | एक स्वप्न, एक सत्य |
| गद्दार | एक लडकी : दो रूप |
| एक गधे की आत्मकथा | छलना |
| देवदास | पाखंडी |
| बिराज बहू | रात और प्रभात |
| पडितजी | प्यार की जिन्दगी |
| चरित्रहीन | सघर्ष |
| आनन्द मठ | एक अनजान औरत का खत |
| आरती | प्रेमिका |
| क्रांतिकारी | पहला प्यार |
| मुक्ता | सागर और मनुष्य |
| सकल्प | इसान या शैतान |
| छोटी-सी बात | अधिकार |
| दायरे | दो बहनें |
| अंधेरा-उजाला | जुदाई की शाम |
| प्यार की पुकार | बहूरानी |
| डाक्टर देव | जुआरी |
| एक सवाल | कलक |
| कसक | शिकारी |
| नीना | मृगतृष्णा |
| कुलटा | हरकारा |
| ज्वारभाटा | धरती की आंखें |
| जाल | |

## कहानी

| | |
|---|---|
| पंचतन्त्र | उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियां |
| पतिता | संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां |
| रहस्य की कहानियां | घोंसला |
| काबुलीवाला | एक पुरुष : एक नारी |
| बंगला की सर्वश्रेष्ठ कहानियां | मंझली दीदी : बड़ी दीदी |

## काव्य : शायरी

| | |
|---|---|
| मेघदूत | दीवान-ए-ग़ालिब |
| गीतांजलि | उमर ख़ैयाम की रुबाइयां |
| हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत | गाता जाए बंजारा |
| जिगर की शायरी | आज की उर्दू शायरी |

## जीवनोपयोगी

| | |
|---|---|
| सफल कैसे हों | प्रभावशाली व्यक्तित्व |
| जैसा चाहो वैसा बनो | सफलता के आठ साधन |

## विविध

| | |
|---|---|
| शकुन्तला | ठीक खाओ, स्वस्थ रहो |
| घूंघट में गोरी जले | आपका शरीर |
| गांधीजी की सूक्तियां | हस्त-रेखाएं |
| पत्र लिखने की कला | अमर वाणी |
| बर्थ कंट्रोल | बिन बुलाए मेहमान |
| योगासन और स्वास्थ्य | शादी या ढकोसला |
| डाक्टर के आने से पहले | हास-परिहास |

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया